

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 18

अंक - 10

अगस्त- II, 2017



पाक्षिक

माउण्ट आबू

₹. 8.00

‘गीता’ योग शास्त्र है युद्ध शास्त्र नहीं

• योग ध्यान ही गीता का सच्चा मर्म - डॉ. नागेन्द्र

• पवित्रता ही सुख-शान्ति का आधार - स्वामी जीवन देव जी महाराज

• अपने स्त्य स्वरूप की पहचान न होना ही दुःख का मूल कारण - आचार्य कर्मा तानपाई

ओ.आर.सी.-गुरुग्राम। ब्रह्माकुमारीज के ओम् शान्ति रिट्रीट सेन्टर में भगवद् गीता विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस अवसर पर देश के अनेक विद्वान, आचार्य एवं महान विचारक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के प्रारंभिक सत्र में विवेकानन्द योगा अनुसंधान संस्थान, बैंगलुरु के अध्यक्ष

हो सकता है। उन्होंने कहा कि दिव्य-गुणों को अपनाने से हम दुखों से मुक्त हो सकते हैं।



नेपाल से आये अंतर्राष्ट्रीय धर्मगुरु आचार्य कर्मा तानपाई ने अपने सम्बोधन

परिवर्तन आ सकता है। उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि काम वासना सहित सभी विकारों पर विजय प्राप्त करने का सहयोग दें। उन्होंने कहा कि गीता में परमात्मा ने कई बार काम विकार को सभी पापों का मूल बताया है।

ओ.आर.सी. की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा ने स्वास्तिका को कल्प के



भारत के राष्ट्रपति महामहिम राम नाथ कोविंद को बधाई एवं शुभकामनाएं देने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ओ.आर.सी. निदेशिका ब्र.कु. आशा तथा खानपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आशा।



भगवद्गीता विषय पर आयोजित संगोष्ठी में अपने विचार रखते हुए ओ.आर.सी. की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा।



डॉ. नागेन्द्र ने कहा कि योग और ध्यान ही भगवद्गीता का असली सार एवं मर्म है। उन्होंने कहा कि भगवद्गीता एक योग शास्त्र है न कि हिंसा का शास्त्र। वास्तव में गीता में वर्णित युद्ध मनुष्य के आंतरिक बुराइयों एवं अवगुणों को समाप्त कर दैवी गुणों को धारण करने का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि योग को स्कूली स्तर से विश्व-विद्यालय स्तर तक लागू करने से ही परिवर्तन संभव है।



शांति धाम वृन्दावन से आये स्वामी जीवन देव महाराज जी ने बताया कि जीवन में आंतरिक एवं भौतिक पवित्रता का बहुत बड़ा महत्व है। पवित्र जीवन के आधार पर ही सुख-शान्ति का अनुभव

में कलियुग को अज्ञान अंधकार का समय बताते हुए कहा कि ऐसे समय पर ही वास्तव में ज्ञान सूर्य परमात्मा के दिव्य अवतरण की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि अपने वास्तविक स्वरूप की अनभिज्ञता ही वास्तव में दुःखों का मूल कारण है।



कार्यक्रम के मुख्य संयोजक राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन ने संगोष्ठी के मुख्य उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा कि गीता के सही अर्थ को न जानने के कारण ही आज मानव असमंजस में है। उन्होंने कहा कि अगर हम गीता के सही महत्व को जान जाएं तो विश्व में एक बहुत बड़ा

चारों युगों की अवधि का प्रतीक बताते हुए कहा कि सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग तथा कलियुग, मनुष्य का बेहतर जीवन से कम बेहतर और द्वापर के बाद गिरावट के रास्ते पर चलने का काल चक्र है। उन्होंने कहा कि अब कलियुग के अन्त में परमात्मा का अवतरण हुआ है

फिर से मानव को दानव से देव बनाने के लिए, ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग के बल से। कार्यक्रम में आए मेहमानों का स्वागत करते हुए उन्होंने कहा कि आप जैसे महान एवं प्रबुद्ध जन ही गीता के असली रहस्य को लोगों तक पहुँचा सकते हैं।

उर्दू प्रेस के प्रसिद्ध स्तम्भकार डॉ. मुजफ्फर हुसैन गज़ाली ने कहा कि यही अति धर्मग्लानी का समय है जब इसका

अन्त करने के लिए तथा एक बेहतर जीवन और समाज का निर्माण करने के लिए



खुदा का धरा पर आना होता है, यही गीता का मूल संदेश भी है। ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय, माउण्ट आबू से आयी गीता स्कॉलर राजयोगिनी ब्र.कु.

ऊषा एवं जबलपुर से भगवद्गीता की व्याख्याता डॉ. पुष्पा पाण्डे ने भगवद्गीता पर देश के अनेक प्रान्तों से आए हुए गीता



वास्तविक गीता ज्ञान व योग का व्यवहारिक स्वरूप कहा।

राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग, भारत सरकार के पूर्व अध्यक्ष जस्टिस वी. ईश्वरैया ने कहा कि गीता हमें अहिंसा परमो धर्म की प्रेरणा देती है। गीता को उसके सही संदर्भ में जानने की आवश्यकता है।

सम्मेलन के मुख्य संयोजक पत्रकार वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष राजीव निशाना ने लोगों

तथा समाज में गिरते हुए नैतिक स्तर पर चिन्ता व्यक्त की और



कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था लोगों की नैतिकता और चरित्र निर्माण की दिशा में सराहनीय कार्य कर रही है।

संगोष्ठी में विशेष रूप से उत्तराखण्ड संस्कृत विश्व-विद्यालय हरिद्वार के पूर्व उप-कुलपति प्रो. महावीर अग्रवाल, श्री जगतनाथ संस्कृत विश्व-विद्यालय के पूर्व उपकुलपति प्रो. अलेख चन्द्र सारंगी, कुरुक्षेत्र संस्कृत विश्व-विद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रमुख डॉ. एस.एम. मिश्रा, उत्कल विश्व-विद्यालय के पूर्व उप-कुलपति प्रो. बिनायक रथ, न्यू दिल्ली टाइम्स की प्रमुख संपादक डॉ. प्रमिला श्रीवास्तव आदि मान्यवरों ने उपस्थित रहकर अपने अपने विचार व्यक्त किये।

भागवद्गीता पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में देश भर के विद्वान हुए एकमत - कहा, गीता ज्ञान से ही होगा सतयुगी दुनिया का निर्माण

‘गणेश’ और हमारा जीवन...

वर्षा ऋतु के आने पर ‘गणपति बप्पा मोर्या...’ की गुंजन छोटे या बड़े मनुष्य के मन मस्तिष्क से बाहर निकलकर वातावरण में सुनाई देने लग जाती है। क्या कभी आपने गणेश की मूर्ति या चित्र को ध्यान से देखा है? अगर आप उसे अच्छी तरह से देखेंगे तो उनके चित्र से ही आध्यात्मिकता का रहस्य जो सीधे हमारे जीवन से जुड़ा हुआ है, आपको ज्ञात होने लगेगा।

आपने इस बात पर ध्यान दिया होगा कि गणपति जब बैठे होते हैं तो



- व. कु. गंगाधर

उनके दाहिने पाँव का थोड़ा-सा भाग पृथ्वी को स्पर्श कर रहा होता है जबकि बाहिनी टांग ऊपर उठी होती है। बायाँ पाँव, दायाँ टांग से दबा होता है। चित्रकार अथवा मूर्ति निर्माता किन्हीं आध्यात्मिक रहस्यों को व्यक्त करने के लिए ही गणपति जी का ऐसा आसन दिखाते हैं।

शरीर-विज्ञान के अनुसार हमारा दायाँ हाथ और दायाँ टांग हमारे मस्तिष्क के बायें भाग से जुड़े होते हैं और हमारी बायीं टांग और बायाँ हाथ हमारे मस्तिष्क के दायें अर्द्ध भाग (राइट हेमिस्फियर) से जुड़े होते हैं। मस्तिष्क-विज्ञानवेत्ता (ब्रेन साइंटिस्ट्स) कहते हैं कि हमारे मस्तिष्क का बायाँ भाग तर्कप्रधान और विश्लेषणात्मक (एनालिटिकल) तथा सूक्ष्म अन्वेषण (एक्सट्रैक्ट थिंकिंग) में कुशल होता है, जबकि हमारे मस्तिष्क का दायाँ भाग हमारे संवेगों (इमोशन्स) का केन्द्र है। यदि इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो तर्क प्रधान बायें अर्द्ध भाग से जुड़ी हुई दायाँ टांग का पृथ्वी को स्पर्श करना संसार तथा इसके तथ्यों (फैक्ट्स) से सम्पर्क बनाये रखने का प्रतीक है। यह इस बात का सूचक है कि यह व्यक्ति इस बात को मानता है कि संसार बना हुआ है (अर्थात् यह स्वप्न-मात्र नहीं है) और कि हमें यहाँ रहते हुए, यहाँ की समस्याओं को हल करना है न कि इनसे आँख मूंद लेनी है।

इसी प्रकार मस्तिष्क के दायें अर्द्ध भाग से जुड़ी हुई बायीं टांग और बायें पाँव का ऊपर उठे रहना और दायाँ टांग से दबे रहना इस बात का सूचक है कि हमारे संवेग और आवेग (इमोशन्स) इस पृथ्वी के आकर्षण से ऊपर उठे होने चाहिए और यह विवेक के अधीन होने चाहिए। ज्ञानवान व्यक्ति के ज्ञान की यही सफलता है कि वह सांसारिक मोह-ममता से उपराम रहता है। वह सांसारिक कर्तव्यों को भी निभाता है; वह ऐसा नहीं कहता कि ‘हे रामजी, जगत बना ही नहीं है’, परन्तु सांसारिक कामनाओं और तृष्णाओं से ऊँचा उठा रहता है।

गणपति जी के सिंहासन से यह दोनों भाव प्रदर्शित होते हैं- एक तो यह कि वे अभी उठे कि उठे अर्थात् यह कि एक टांग तो उन्होंने नीचे कर ही ली है और दूसरी टांग वे अभी नीचे करना ही चाहते हैं। उनकी इस बैठक से दूसरा भाव यह निकलता है कि उन्होंने एक टांग तो उठा ही ली है और दूसरी भी वे उठा ही रहे हैं क्योंकि तभी तो उनका पाँव केवल थोड़ा-सा स्पर्श ही कर रहा है। यदि हम इनमें से प्रथम भाव लें तो उससे यह प्रतीत होता है कि वे सदा तैयार (एक्टिव एंड एलर्ट) हैं। मतलब वे जब चाहें, कार्य-क्षेत्र में उतर आयें। उनकी इस बैठक से दूसरा यह भाव प्रदर्शित होता है कि उन्होंने मन को संसार से समेट तो पहले ही रखा है, निमित्त मात्र वे कर्म क्षेत्र पर हैं और इस पर भी वे क्षण में ही मन को इससे पूर्णतः हटाकर ऊपर की स्टेज में अविलम्ब रीति से स्थित हो सकते हैं, अर्थात् उनकी ऐसी बैठक भी उनकी ज्ञान-निष्ठ स्थिति की परिचायिका है।

गणपति का वाहन-मूषक

यह कितना विचित्र है कि इतने भारी-भरकम गणपति जी के लिए वाहन है-चूहा! अवश्य ही इसका भी कोई गहन अर्थ होगा। चूहे की यह विशेषता है कि वह हर चीज़ को, चाहे महंगी हो या सस्ती, कुतर-कुतर करता रहता है। अपने खाने के लालच के कारण दूसरे की हर चीज़ को टूक-टूक करके रख देता है। ठीक ऐसे ही कुछ लोग दूसरों की हर एक बात को चाहे वह कितनी ही समझदारी की मूल्यवान क्यो न हो, कुतर-व्योद करते हैं। वो तर्क का प्रयोग, बात को गहराई से समझने और लाभान्वित होने के उद्देश्य से नहीं करते बल्कि उसका अनुचित प्रयोग करके बात को टूक-टूक करने में लगाते हैं। वे समझते हैं उसे विवेक, परन्तु वह सद्विवेक की बजाए होता कुविवेक। वो हंस की तरह का नहीं, बल्कि चूहे की तरह का लक्षण है। ज्ञानवान व्यक्ति ऐसी प्रवृत्ति को अपने काबू में रखता है। वो तर्क भले ही करे परन्तु कुतर्क नहीं करता, अर्थात् वो तर्क को अपने वश में रखकर प्रयोग करता है। इसी अर्थ में चूहा (मूषक) गणपति जी का वाहन है। गणपति विवेकवान, तर्क सम्पन्न हैं परन्तु वह

- शेष पेज 7 पर

निश्चयबुद्धि बन आगे बढ़ने से हमारी विजय निश्चित

अभी हमारे हर संकल्प में, हर श्वास में, हर समय परमात्मा की स्मृति हो। शरीर में हैं तो भी स्मृति है, अगर शरीर अभी छूट जावे तो भी स्मृति में रहें क्योंकि जितना सिमरण करेंगे, सिमर-सिमर सुख पायेंगे उतना कलह-क्लेश मिटेंगे। थोड़ा भी नाराज़गी है तो उसको रखो नहीं, तुरंत मिटा दो। राजी रहने से बहुत खुशी होती है इसलिए कभी भी नाराज़ नहीं होना है। इसके लिये हर राज को समझना है, जो कुछ हो रहा है अच्छा है, जो होगा सो अच्छा, जो हुआ वो अच्छा... इसलिए मेरे को यह राइट हैण्ड का हाथ अच्छा लगता है। आप भी शान्ति में बैठके यह रिहलसल करो कि जो हुआ... अच्छा है, जो हो रहा है अच्छा है, जो भी होगा वो अच्छा ही होगा। बस। क्या बोलूँ और, एक परमात्मा बाप हमारे से खुश और मैं उसकी पढ़ाई में जो कमाई है उससे खुश। तो ज़्यादा सोचो नहीं, एक बिन्दी लगाओ तो 10 हो जायेंगे, दूसरी बिन्दी लगाओ 100 हो जायेंगे, तीसरी बिन्दी लगाओ 1000 हो जायेंगे। समझा, सिम्पल बात है। बिन्दी कहाँ लगानी है एक शिवबाबा दूसरा न कोई। शिव भोला भण्डारी है ना, यह वन्दरफुल है। है भोला भण्डारी और कहता है मैं जन्म मरण में नहीं आता हूँ, इसलिए ब्रह्मा तन में आकर के अपना परिचय ज्ञान का सागर है, प्रेम का सागर है, शान्ति का सागर है, वो अनुभव कराता है, बहुत अच्छा है। तो निश्चय बुद्धि, निश्चित रहना, निमित्त बनके अपनी जीवन यात्रा सफल करना। परन्तु धरती पर पाँव न

हो तो क्या बनेंगे? फरिश्ता। फरिश्तों के पाँव धरती पर नहीं होते हैं। सदा ही कदम-कदम में पदमों की कमाई है इसलिए पाँव को मैला नहीं बनाना है। अगर पाँव से धरती पर चलेंगे तो मैले हो जायेंगे इसलिए सदा ही पाँव को साफ रखो, क्योंकि इस पाँव यानी इन कदमों से ही तो सारे विश्व की सेवा करनी है। ऐसे नहीं विश्व की सेवा करने के लिये मेरे को पैसा चाहिए, मेरे को ये चाहिए, इस चाहिए चाहिए को छोड़ो। चाहिए-चाहिए करेंगे तो अन्त मते सो गते... कोई भी ऐसे ख्याल रखने से गति भी ऐसी हो जायेगी, इसलिए कभी भी स्थिति ऊपर नीचे न हो, प्रैक्टिकली निश्चय का बल हो, तो निश्चयबुद्धि विजयंती। भले तन यहाँ है पर मन ऊपर में है, इधर उधर नहीं देखो, ड्रामा अनुसार यह जो पृथ्वी है ना, गोल दिखाते हैं। वहाँ से पैदल चलते हैं क्या! अंगुली से वो भी इशारा करता है, बच्चे निश्चय की कमाल देखते जाओ। जब बाबा अव्यक्त हुआ तो ज़रा भी हमको यह नहीं लगा अभी कैसे चलेगा। नहीं। यह भी जानते हैं और देखा है विकर्माजीत, कर्मातीत और अव्यक्त स्थिति को पाने के लिये बाबा ने कैसे पुरुषार्थ किया। बाबा के चेहरे को देख लगता था, यही पुरुषार्थ है। विकर्माजीत माना कोई भी रॉन्ग काम नहीं हो सकता है। विकर्माजीत बनने से कर्मातीत बन सकते हैं। जो कुछ हुआ, हो गया, उसका न चिंतन है, न वर्णन है। तो सहनशीलता और समाने की शक्ति से कोई भी बात के विस्तार में नहीं जाते हैं। हमको क्या करने का है, उसको

ध्यान में रखना है। दिल कहती है शुक्रिया बाबा आपका, जो आपने यहाँ बिठाके अपना बनाके कैसी-कैसी



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

सेवा करते नशा चढ़ा हुआ है हम किसके हैं! निमित्त भाव, निर्माण चित्त के बीच में नम्रता भाव कितना न्यारा प्यारा बना देता है। हरेक का पार्ट अपना है, न्यारा है, दो एक जैसे नहीं हो सकते। जिसके चित्त में सच्चाई है वो आनन्द स्वरूप है, सत्, चित्त, आनन्द स्वरूप, ऐसी स्थिति में सदा रहना। बाकी सफेद कपड़े जब खाली, कुछ नहीं है। वो चला रहा है, हम चल रहे हैं। देख रहे हैं सभी, यहाँ से उठो कहाँ जा रहे हैं? कितना अच्छा मेरा बाबा है, जो कहता है तुम यहाँ सिर्फ शान्त रहो, खुश रहो। कोई पूछते हैं आप कैसे शान्त रहते हो? अरे, यह मेरा भाग्य है। भगवान मेरा साथी है और ड्रामा में जो पार्ट है वो बजाने में खुश हैं। तो साथी और साक्षी माना मैं क्या करूँ? करा रहा है ना, जिम्मेवारी उसके ऊपर है। हमको सिर्फ कहता है चल उड़ जा रे पंछी, यह देश हुआ बेगाना...। अब इस देश में क्या काम है तुम्हारा...। तो बाबा ने हमेशा निश्चय बुद्धि विजयंती का हमको अच्छा पाठ पढ़ाया है। निश्चय बुद्धि, निश्चित रहना। निमित्त भाव और नम्रता से चलना।



दादी हृदयमोहिनी अति. मुख्य प्रशासिका

अटेंशन के साथ रोज़ स्वयं ही स्वयं की चेकिंग करो

बाबा ने खास मधुबन वालों को कहा है कि अगर रिज़ल्ट ठीक निकली तो मैं आऊंगा, मिलूंगा। तो इतनी बाबा ने जब ऑफर की है, तो हम लोगों को अटेंशन भी इतना देना चाहिए। तो बाबा ने जो कहा कि व्यर्थ संकल्प नहीं चलें, यह चेकिंग किसने की? रिज़ल्ट ठीक रही? चार्ट भी सिर्फ कॉपियों में भरने के लिये नहीं रखना, चार्ट रखना माना चेन्ज। हम भी पहले-पहले रोज़ चार्ट लिखते थे वो ठीक है। लेकिन यह चेक करें कि हमारे में फर्क पड़ रहा है? चार्ट क्यों लिखते हैं? स्वयं को चेंज करने के लिए लिखते हैं ना क्योंकि किसी समय कुछ भी हो सकता है। बाबा अचानक का पाठ तो हमको दे ही रहा है। तो हमारा पुरुषार्थ ऐसा है? मैंने देखा है पुरुषार्थ सभी का चलता है लेकिन चलते-चलते पुरुषार्थ में दृढ़ता कम हो जाती है। जिस समय संकल्प किया, उस समय तो दृढ़ता होती है फिर जब कर्म में आते हैं, बातचीत करते हैं, जो भी ड्युटीज़ होती हैं उसमें आते, संगठन में आते दृढ़ता कम हो जाती है। और दृढ़ता ही सफलता की चाबी है, अगर दृढ़ता कम हो गई तो सफलता जो चाहते हैं वो नहीं होती है। होती है लेकिन जैसा चाहते हैं वो नहीं होगी। तो

बाबा ने अटेंशन खिचवाया है, उसी अनुसार हम क्या समझते हैं! अटेंशन है? आज से मेरा संकल्प है कि हर एक को रोज़ अपना दृढ़ता का चार्ट देखना चाहिए। जो भी मैंने पुरुषार्थ में संकल्प किया, उसमें दृढ़ता चलती रही या थोड़ा अलबेलापन आ जाता है, ठीक है कर तो रहा हूँ, हो जायेगा, रहेगा थोड़ेही, टाइम पर पूरा हो जायेगा... ऐसे दृढ़ता कम करने के संकल्प जो आते हैं वो हमको ढीला कर देते हैं। और बाबा को रोज़ अपना सारे दिन का चार्ट देवें जैसे बड़े को देना ही है, ऐसे नहीं बाबा को दिया ना, ऐसे नहीं दृढ़ता से दिया! अपने फायदे को सोच करके दिया या ऐसे ही सुना है तो देना ही है। तो अब कोई प्लैन बनाओ, बना सकते हैं? कैसे बनायेंगे? बना तो सकते हो, शाबाशी है लेकिन कैसे बनायेंगे? अपना अपना बनायेंगे या कोई ग्रुप बैठ करके बनायेगा? क्या सोचा है? तो पक्का है? कल से सभी रात्रि को बाबा को अपनी रिज़ल्ट देके और जो भी कुछ हो गया उसकी माफ़ी भी अभी ले लो। बाबा के हिसाब से तो व्यर्थ संकल्प भी गलती है, तो व्यर्थ संकल्प हमारे चले? समझो कोई चीज़ देखी, यह हो रहा है, उसके संकल्प चल पड़ते हैं यह क्यों हुआ, क्या है, कैसे है, यह कहाँ तक चलेगा, यह नहीं होना चाहिए, मतलब ऐसे फालतू संकल्प चलते हैं.. क्योंकि मेरी जिम्मेवारी है ही नहीं

इसकी। तो चेक करना है लेकिन पता कैसे पड़े कि चेक आपने किया या नहीं? हम तो कनेक्शन में आते ही नहीं हैं, उसकी क्या विधि हो? अपने ही मन को पक्का करना होगा क्योंकि रोज़ तो कोई आपस में मिलता ही नहीं है तो अपना ही मास्टर बनके अपने को चेक करना पड़ेगा, और कोई विधि नहीं है। इसमें अपने आप ही हेड बनना पड़ेगा। तो एकदम दृढ़ निश्चय करो, दो अक्षर लिखना है, बस। डायरी रखनी है फिर कभी भी बाबा डायरी मंगा के देख सकता है। डायरी में ज़्यादा नहीं लिखना है। व्यर्थ संकल्प चले? कितना टाइम चले? कभी कभी एक ही टाइम पर व्यर्थ संकल्प 10 मिनट भी चल सकते हैं, 2 मिनट भी चल सकते हैं लेकिन टोटल सारे दिन में कितना व्यर्थ संकल्प चले? या मैंने जो लक्ष्य रखा सवेरे कि आज मैं इस बात पर खास अटेंशन दूँगा, तो वो भी चेक करो कि सारे दिन का जो हमने संकल्प रखा स्वरूप का वो मेरा ठीक रहा या नहीं? बस। तो यह कर सकते हैं? हो सकता है? क्योंकि हमारा बाबा से प्यार है, लेकिन प्यार में यह व्यर्थ का जो विघ्न पड़ता है उसको मिटाना है। बाबा का आप सबसे प्यार है तो बाबा कोई भी बात अगर सुनते हैं तो बाबा को अच्छा नहीं लगता है। तो हम जिस लक्ष्य से आये हैं, वो लक्ष्य हमारा पूरा हो रहा है या नहीं?

पवित्र शक्तियों का ईश्वरीय सेवा में समर्पण

अरावली श्रृंखला के मध्य स्थित, प्रकृति के अनोखे आँचल में बसा एक स्थान, जहाँ पर पवित्रता को सम्पूर्णतया धारण करने वाली दिव्य आत्माओं से सुसज्जित एक प्रांगण, जहाँ की महक सभी को अपनी तरफ ही आकर्षित कर लेती है। वहीं एक अनोखा दृश्य था जिसमें तीन सौ पवित्र रचनाओं, कुमारियों ने परमपिता परमात्मा के सर्वोत्तम परिवर्तन के कार्य के लिए स्वयं को आजीवन समर्पित किया। जिसकी आँखों देखी कुछ झलकियाँ आपके समक्ष हैं...

सावन में शिव की हो गयी तीन सौ युवा बहनें, समर्पण समारोह में अभिभावक भी उपस्थित

शांतिवन। सावन मास परमात्मा भोलेनाथ शिव का मास माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि परमात्मा शिव की दिल से पूजा अराधना करने से सहज ही प्रसन्न हो जाते हैं। परन्तु यदि सावन मास में जब परमात्मा शिव को ही अपना वर बना लें तो इससे अच्छा और क्या हो सकता है। ऐसा ही कुछ हुआ ब्रह्माकुमारी संस्था के शांतिवन के भव्य डायमण्ड हॉल में, जब देश के कोने कोने से आयी तीन सौ बाल ब्रह्मचारिणी युवा बहनें अपने जीवन की डोर परमात्मा शिव को सौंपकर संस्थान में समर्पित हो गयीं। इस अवसर पर उनके माता पिता और नाते रिश्तेदार भी उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम में आये हज़ारों लोगों को सम्बोधित करते हुए ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि यह जीवन कई जन्मों से उत्तम है। जिसके जीवन में स्वयं परमात्मा का वास हो जाता है, वह हमेशा के लिए बुराइयों से मुक्त हो जाता है। परमात्मा की तन मन धन से सेवा करने के लिए आजीवन समर्पित होना महान पुण्य का कार्य है।

कार्यक्रम प्रबन्धिका ब्र.कु. मुन्नी ने इन पवित्र युवा बहनों से आह्वान किया कि वे जीवन में उच्च आदर्श एवं मूल्यों को धारण कर महान बनें और दूसरों के लिए प्रेरणादायी बनें।

संस्था के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर ने कहा कि हमारी बहनों ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि नारी चाहे तो विश्व को बदल सकती है, किसी भी कुरीति और बुराइयों को समाप्त कर सकती है। ये

बहनें खुद का सकारात्मक बदलाव करते हुए समाज को भी बदल कर ही रहेंगी, जहाँ सभी सुख-शांति और चैन से रहेंगे।

कार्यक्रम में संस्थान के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन, शांतिवन प्रबन्धक ब्र.कु. भूपाल, ब्र.कु. अमीरचंद समेत कई लोगों ने अपने अपने विचार व्यक्त किये।

क्या है समर्पण: ब्रह्माकुमारी संस्था के सम्पर्क में आने के बाद कम से कम पाँच साल तक प्रशिक्षु के तौर पर राजयोग मेडिटेशन के साथ संस्था के नियमों पर सम्पूर्ण रूप से चलने वाली बहनों का समर्पण होता है। जिसमें उनके माता पिता की भी सहमति होती है। इसके लिए पूरी तरह से ईश्वरीय अलौकिक रस्में निभायी जाती हैं।

सेवा स्थानों पर होता है स्थानान्तरण: समर्पण के बाद सभी बहनें संस्थान के देशभर में फैले सेवाकेन्द्रों पर चली जाती हैं। वहाँ रहकर अपने जीवन की आध्यात्मिक उन्नति के साथ दूसरों के जीवन में भी उन्नति कराकर सुकून लाने की सेवा करती हैं और हमेशा ईश्वरीय सेवाओं में तत्पर रहती हैं।

भव्य स्वागत: समारोह के आरंभ में कुमारियों को पीली चुन्नियों में सजाकर बैंड बाजों के साथ उनका भव्य स्वागत किया गया, जिसमें उनके माता पिता तथा परिवार के लोग भी शरीक हुए। **शपथ ग्रहण समारोह:** कार्यक्रम के बीच समर्पण के दौरान समर्पित होने वाली बहनों को अपने लक्ष्य और श्रेष्ठ कर्म के लिए उनसे दृढ़ प्रतिज्ञा करायी गयी, जिससे कि वे अपने लक्ष्य में कामयाब हो सकें और सबका कल्याण भी कर सकें।



समर्पण समारोह के दौरान देश के कोने कोने से आई तीन सौ पवित्र बहनें तन मन धन से ईश्वरीय सेवा में समर्पित होने का शपथ ग्रहण करते हुए।

क्या कहना है इस अदभुत दृश्य का, जिसमें रथी, सारथी, दोनों छवि अनुपम है, आँखों से ओझल ना होने वाला दृश्य, जिसे चिरकाल तक याद रखा

के आधार से जीवन जीना, वो तो सोने पर सुहागा हो ही जायेगा। आत्मबल से इस पथ पर चलने वाली कुमारियों ने स्वेच्छा से इस जीवन को

से बहुतों का जीवन पवित्र बना रही हैं। यही बहनें ही दरअसल दुर्गा, गायत्री, पार्वती हैं, जिनकी आप महिमा गाते हैं। इन पवित्र कन्याओं को, जीवन को



समारोह के दौरान समर्पित होने वाली पवित्र कुमारियों के साथ कैडल लाइटिंग करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. मुन्नी, ब्र.कु. भारती दीदी, राजयोगिनी ईशू दादी, ब्र.कु. सरला तथा ब्र.कु. शारदा।

जाए, उसकी झलकियाँ यहाँ पर दिखीं। मनोरम और मनोहारी छवि जिसमें एक पवित्र कन्या, परम पवित्र परमात्मा के साथ जुड़कर अपना जीवन, परमात्म कार्य में सम्पूर्ण रूप से समर्पित करने जा रही हो, और जाए भी क्यों ना! क्योंकि वह सच्चा पति-परमेश्वर है, जिसे कभी भी किसी तरह की हानी जीवन में होने वाली नहीं है।

आज इस कलियुग के दौर में कोई भी पूर्णतया सुरक्षा की जिम्मेवारी ले नहीं सकता, लेकिन परमात्मा ही एक ऐसा साथी है, जिसके साथ हम हर समय सुरक्षित महसूस कर सकते हैं। पवित्रता

चुना है, और विश्व परिवर्तन के इस महाकुम्भ में अपना सबकुछ दे दिया है। अब उनके लिए यही है, बस परमात्मा। यह कार्य इतना बड़ा है कि उसके लिए पवित्रता ही एक नींव है, जो इस कार्य को अंत तक थामे रख सकती है। आप सोचिए, आधुनिक युग में लोग क्या-क्या नहीं कर रहे हैं! आज के युवक-युवतियाँ दुनिया की भ्रान्तियों में फँसे पड़े हैं। उसमें से निकल कर सत्य राह चुनना काबिले तारीफ है।

खुद भी पवित्र बने, औरों को भी बनाया है, आज इसी की ज़रूरत है सभी को। थोड़ी सी ब्रह्माकुमारियाँ अपने इस जीवन

जीवनमुक्ति दाता से जोड़ने वाली, अपने को सर्वश्रेष्ठ और सभी के जीवन को सर्वश्रेष्ठ बनाने के निमित्त आत्माओं को शत् शत् नमन्।

पवित्र राह चुना है पवित्र कन्याओं ने, परमात्मा के साथ सगाई चिरकाल की। यह राह ले जायेगी स्वर्णिम दुनिया की ओर, इन्हीं की होती आरतियाँ, ये हैं जगत जननी पार्वतियाँ।।



रायपुर-छ.ग.। विद्युत भवन में छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत मण्डल के अधिकारियों को 'तनाव प्रबंधन' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. प्रो. ई.वी. स्वामीनाथन, मुम्बई।



सतना-म.प्र.। मीडिया संगोष्ठी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए प्रो. कमल दीक्षित, ब्र.कु. शीला, ब्र.कु. शांतनु, ब्र.कु. सीता तथा मीडिया जगत से जुड़े गणमान्य लोग।



नवी मुम्बई-पनवेल। लायन्स क्लब द्वारा आयोजित 'लायन्स क्लब में नये समिती की रचना' कार्यक्रम में मंचासीन हैं डॉ. शुभदा नील, राजयोगिनी ब्र.कु. तारा, लायन्स क्लब के पूर्व गवर्नर लायन अशोक जोशी, एल.जे. तिवारी, श्रीनिवासन जी तथा लायन्स क्लब के अन्य सदस्य।

स्वीकार कर लेंगे तो डिस्टर्ब नहीं होंगे

गतांक से आगे...

प्रश्न: हमें औरों की प्रतिक्रिया से परेशान या गुस्सा नहीं होने के लिए क्या करना होगा?

उत्तर: आप दूसरों के बारे में कुछ भी गलत सोचना बंद करें और अपने-आप से बात करें कि वो ऐसा करने के लिए स्वतंत्र हैं। हम सिर्फ उनसे आग्रह कर सकते हैं कि आप अपने मोबाइल को साइलेंट मोड पर रख दें या बंद कर दें। लेकिन उसके बाद पसंद उनकी है। हमें हर एक की पसंद को सम्मान देना है। हमें कभी भी यह आशा नहीं करनी चाहिए कि सारी दुनिया हमारे ऑर्डर में चलने वाली है। ये जो मोबाइल बजा, वो उतनी अशांति पैदा नहीं करता है, लेकिन हम जो ये सुनकर क्रुद्ध हो जाते हैं, वो मोबाइल से ज्यादा परेशानी पैदा करता है।

फिर अगर किसी का मोबाइल बजता भी है तो तुरंत अपने सोच के ढंग को बदल दें और यह सोचें कि कितना अच्छा ट्यून है, बहुत अच्छा संगीत है, बहुत अच्छी मोबाइल है तो इससे आप परेशान भी नहीं होंगे और आपकी एकाग्रता भी बनी रहेगी। फिर चाहे कितनी ही बार मोबाइल क्यों न बजे। मोबाइल हमें परेशान नहीं कर रहा है, हम जो क्रुद्ध हो जाते उससे ज्यादा डिस्टर्बेंस होती है। उससे हमारी एनर्जी का स्तर भी घट जाता है। जहां कहीं भी हम इस तरह से थोड़ा-थोड़ा क्रुद्ध होते हैं तो हमें यह बंद कर देनी चाहिए

क्योंकि आगे चलकर यह हमारी आदत बन जाती है। फिर मुझे पता भी नहीं चलेगा और हमें लगेगा कि क्रुद्ध होना तो स्वाभाविक है।

प्रश्न: मैंने जो कहा वो होना चाहिए अगर नहीं होता है तो मुझे चिढ़ होने लगती है। जैसे मान लो कि हमने कहा कि फूल को यहां से यहां रखना चाहिए तो वैसा ही रखा होना चाहिए, अगर नहीं होता है तो चिढ़ होने लगती है।

प्रश्न: फिर यह धीरे धीरे बढ़ती जाती है। इसलिए जहां आप नोटिस कर रहे हो माना कि आपने उस पर और ही अटेंशन डाल दिया तो हमें स्वयं ही स्वयं से बात करनी चाहिए। अगर हम उनको बोल सकते हैं मोबाइल ऑफ करो, तो उसी तरह हम अपने को भी तो बोल सकते हैं क्रुद्ध मत होओ। हम हमेशा दूसरों को आदेश क्यों दें, स्वयं को क्यों नहीं।

हर समय मैं क्रुद्ध हो जाती हूँ और यदि जानकारी है तो पता चल जाता है कि हम क्रुद्ध हुए हैं, उसके बाद हमें अंदर से अच्छा नहीं लगता है। आज के बाद अगर किसी प्रोग्राम में मोबाइल बजेगा तो उसे आप स्वीकार कर लो और ये सोचो कि आप

अकेले तो नहीं हैं जो डिस्टर्ब हो रहे हैं। बाकी लोगों ने तो उसे स्वीकार कर लिया, तो आप क्यों नहीं उसे स्वीकार कर लेते हो। यदि आप क्रुद्ध होते हो तो बाकी तो वैसे ही बैठे हैं क्रुद्ध होने के लिए। अब जिनका मोबाइल बजता है ना घूम करके लोग उसको घूरते हैं। जबकि यह नियम के अनुसार गलत है। एक्सेप्ट माना, आप उस चीज़ को स्वीकार कर लेते हो। अब होता क्या है कि जिसका मोबाइल बजता है, वो तो उसे ऑफ करना भूल जाते हैं। जैसे ही उनका मोबाइल बजता है पहले तो वो ही एकदम से घबरा जाते हैं और जल्दी से पर्स से मोबाइल निकालने की कोशिश करने लगते हैं। वो जो सबकी एनर्जी उन तक पहुंचती है उनको वो मोबाइल मिलता ही नहीं है उनके पर्स में। फिर मोबाइल में उनको पता ही नहीं चलता है कि उसको कैसे 'स्वीच ऑफ' करना है। आप देख सकते हैं कि इरिटेशन करने से उसका क्या प्रभाव पड़ रहा है। क्रुद्ध होने से आपकी क्षमता एकदम से घट जाती है। आपका मोबाइल बजा, कोई बात नहीं, थोड़ी देर के बाद शांति से उसे बंद कर दें। तब व्यक्ति अनुभव करता है कि मुझे कोई क्रुद्ध नहीं हुआ। तो वो भी उसको आराम से ऑफ कर देते हैं। ये हम सबको ध्यान रखना है आपस में एक-दूसरे के साथ काम करते हुए कि एक-दूसरे को हम स्वीकार करें, क्योंकि हर कोई शांति से कार्य करना चाहता है। - क्रमशः



ब्र. कु. शिवानी



मुम्बई। न्यू यॉर्क के युनाइटेड नेशनल्स हेडक्वार्टर्स में यू.एन. द्वारा ब्रह्माकुमारीज की अति. मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी को उनके राष्ट्र के प्रति उत्कृष्ट सेवाओं तथा आउटस्टैंडिंग इंडिविजुअल एचीवमेंट्स के लिए 'भारत गौरव अवॉर्ड' से नवाजा गया। दादी की अस्वस्थता के कारण ब्र.कु. भूमिका ने यह अवॉर्ड प्राप्त किया तथा मुम्बई में यह अवॉर्ड दादी को प्रदान किया गया।



अहमदाबाद। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यक्रम के दौरान बाबा रामदेव जी को ईश्वरीय सेवाओं से परिचित कराते हुए ब्र. कु. ललित, माउण्ट आबू, ब्र. कु. ईशिता तथा ब्र. कु. मीना।



मंदसौर-म.प्र.। बैंक ऑफ बड़ौदा के 110वें स्थापना दिवस पर ब्रांच मैनेजर ओ.पी. मीणा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र. कु. हेमलता।



मुम्बई-विले पार्ले। 23वें नेस्कोन 2017 अवॉर्ड सेरेमनी में राजयोगिनी ब्र. कु. योगिनी दीदी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किये जाने पर वहाँ दीदी द्वारा 'स्पीरिचुअलिटी इन मेडिसिन' विषय पर सम्बोधित किये जाने के पश्चात् दीदी का आभार व्यक्त करते हुए डॉ. अगम वीरा, सेक्रेट्री जेनरल व ऑर्गनाइज़िंग कमिटी।



नवसारी-गुज.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र. कु. भानु, ब्र. कु. गीता, एल. सी. पटेल, पूर्व चुनाव आयोग कमिश्नर, सुरेन्द्र जैन, डिस्ट्रिक्ट हेल्थ ऑफिसर तथा ब्र. कु. अल्पना।



व्यावरा-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम में मेहमानों को ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् चित्र में जे. पी. मिश्रा, एस. डी. ओ. पी., आशीष दूबे, ए. डी. पी. ओ., गायत्री गुर्जर, अध्यक्ष, जिला पंचायत, पुरुषोत्तम दांगी, पूर्व विधायक, ब्र. कु. मधु तथा ब्र. कु. लक्ष्मी।

स्वास्थ्य बढ़ती तोंद पर योग से लगाएं लगाम

बढ़ता कमर का घेरा कई दिक्कतों का कारण बनता है। यह न सिर्फ रोगों को बढ़ाता है, बल्कि चलने-फिरने और जोड़ों को भी प्रभावित करता है। ऐसे में कुछ योगासनों से पेट की चर्बी कम कर सकते हैं। ये योगासन चर्बी घटाने के साथ कई तरह के लाभ देते हैं।

मोटोपे को रोकने के कई उपाय बताए गए हैं, उनमें से योग भी एक है। कुछ खास योग आपकी मदद कर सकते हैं।

शलभासन

ऐसे करें...

पेट के बल लेटें और हथेलियाँ जांघों के नीचे रखें। ठोड़ी को ज़मीन से लगायें और धीरे-धीरे पैरों को ऊपर उठाएं। घुटनों को मुड़ने ना दें। दोनों पैरों को जितना ऊपर ला सकते हैं,



लायें। कुछ सेकंड इस स्थिति में रुकें। धीरे-धीरे पूर्वावस्था में आएं। 30-30 सेकंड के पाँच राउंड करें। आँखें बंद और एकाग्रता

पीठ व पेट पर हो।

ये न करें...

पीठ या कमर में अधिक दर्द हो, तो एक पैर से भी इसे किया जा सकता है। हर्निया व अपेंडिक्स के मरीज इसे न करें।

फायदे...

यह जोड़ों के दर्द के अलावा पाचनशक्ति बढ़ाता है और एसिडिटी की समस्या से भी निजात दिलाता है।

धनुरासन

ऐसे करें...

पेट के बल लेटें। दोनों पैरों को घुटने से मोड़ लें। दोनों हाथों से दोनों पैरों को टखनों के पास से पकड़ लें और धीरे धीरे शरीर को ऊपर की ओर खींचें। हाथ एकदम खिंचे होने चाहिए।



ये न करें...

पेटदर्द, पीठदर्द, गर्दन दर्द और घुटने के दर्द में यह आसन न करें।

फायदे...

यह शरीर को लचीला बनाकर रक्त संचार को बेहतर करता है। यह श्वास संबंधी

समस्याओं जैसे अस्थमा और ब्रॉन्काइटिस में भी फायदेमंद है।

शशांकासन

ऐसे करें...

इसे करने के लिए वज्र मुद्रा में बैठ जाएं और आँख बंद करें। सांस लेते हुए अपने हाथों को ऊपर उठाएं। अब धीरे-



धीरे श्वास छोड़ते हुए आगे की ओर झुकें और हाथों को स्ट्रेच करते हुए ज़मीन को छुएं।

ये न करें...

पेटिक अल्सर से पीड़ित लोग और गर्भवती महिलाएं इसे न करें। इसके अलावा अगर घुटने में दर्द, पीठदर्द, हाई बीपी और अर्थराइटिस के मरीज हैं तो वज्रासन में न बैठें।

फायदे...

यह आसन स्फूर्ति लाने के साथ स्लिम बनाता है। यह पेट की मांसपेशियों को टोन करता है। इसके अलावा यह शरीर का रक्त संचार बढ़ाकर पेट व लिवर की कार्यक्षमता बढ़ाता है।

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

आज हम मन से संबंधित कुछ ऐसे विषय को छूने जा रहे हैं जिसे मनोविज्ञान में डर या भय के साथ जोड़ा जाता है। अक्सर देखा गया है कि मनुष्य का सम्पूर्ण व्यक्तित्व इन्हीं डरों के इर्द गिर्द घूमता रहता है। मनुष्य का शरीर दो भागों में विभाजित है, स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर। स्थूल शरीर के भाग को तो आप जानते ही हैं, वैसे ही सूक्ष्म शरीर हमारी आत्मा के साथ जुड़ा होता है। उसी के अंदर भय दुःख चिंता आदि रहते हैं। इन सभी का एक साथ समन्वय होना ही हमारे व्यक्तित्व को बदल देता है। इसलिए हम इसको एक श्रृंखला में करेंगे...

यह अठारह इंच शरीर के चारो तरफ फैलता है। भौतिक शरीर की ऊपरी परत भी हम इसे कह सकते हैं, जो कि भौतिक शरीर की फ्रिक्वेंसी से अलग होता है। माँ के गर्भ में बच्चा प्रकाशमय देह के आधार से ही प्रवेश करता है, अर्थात् प्रकाशमय



के लिए जैसे किसी बच्चे के पेट में हमेशा दर्द रहता हो, और वो दर्द काफी सालों तक रहे, या फिर यूँ कहें कि वो हमेशा उस दर्द के बारे में कोसता रहे, कुढ़ता रहे, तो वो सारी विचार तरंगें आभा के अंदर बढ़ती रहती हैं और वो तरंगें जब आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरे शरीर में प्रवेश करेगी तो वो तरंगें उस एहसास को लेकर चली जाएंगी, इसलिए अगर आपको किसी अंग में तकलीफ है तो आपका ये अभी का नहीं है, पिछले जन्म का है, जो आप आभा के अंदर लेकर आए हैं, और ये आने वाले समय में, कुछ दिनों में बच्चे के अंदर उभरना शुरू होता है। इसलिए

शरीर के ढाँचे के आधार से भौतिक शरीर लेता है। अर्थात् कोई व्यक्ति यदि बुद्धि से कमजोर है, कोई विकलांग है, तो उसकी विकलांगता प्रकाशमय शरीर में छुपी हुई होती है। अर्थात् जब गर्भ में आत्मा इस शरीर द्वारा प्रवेश करेगी तो वहाँ उस अंग में आभा या प्रकाश नहीं फैलेगा, जहाँ उसे चोट लगी हो, उसका एहसास हमेशा प्रकाशमय शरीर में रहता ही है। उदाहरण

हम चाहे कितना भी इलाज करा लें, वो ठीक नहीं होगा जब तक प्रकाशमय शरीर में ये वाले विचार हैं। इसलिए जब हम इन विचारों को हटा देंगे तो हमारा उस अंग से संबंधित दर्द हमेशा के लिए चला जाएगा। लेकिन इसकी एक विधि है, वो उसी अनुसार करने से होता है। अगले अंक में हम इसके बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे।
- क्रमशः



गुलबर्गा-कर्नाटक। 'सिन्थेसिस ऑफ योगा' कार्यक्रम के दौरान उपस्थित हैं पूज्य लिंगराज अप्पा, शरण बसवेश्वर संस्थान, एस.एम. पाटील, प्रेसाइडिंग ऑफिसर, लोक अदालत, नवीन जी, सिविल जज, ब्र.कु. विजय दीदी, ब्र.कु. प्रेम तथा ब्र.कु. पूनम।



नवसारी-गुज.। बस डिपो में ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित 'व्यसन मुक्ति प्रदर्शनी' का उद्घाटन करते हुए डिपो मैनेजर महेश पटेल, ट्राफिक इंस्पेक्टर रामसिंह जाडेज, असिस्टेंट टी.आई. धीरू अहिर, एडवोकेट प्रदीप शंकर, ब्र.कु. गीता बहन व ब्र.कु. मुकेश बहन।



विलासपुर-छ.ग.। प्रसूती एवं स्त्री रोग सोसायटी तथा वानबरी लि. के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'बच्चों के व्यक्तित्व विकास में स्त्री रोग तज्ञ की भूमिका' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. डॉ. शुभदा नील, मुम्बई, डॉ. शिवानी, दिल्ली, डॉ. तृप्ति नागरिया, डॉ. ज्योति जायसवाल, डॉ. मनोज चेलनानी, डॉ. गौर तथा अन्य।



वडोदरा-अल्कापुरी। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित पंद्रह दिन के 22 योग शिविर के समाप्ति समारोह में मंचासीन हैं रिलायंस इंडस्ट्रीज के सीनियर वाइस प्रेसीडेंट एम.सनतकुमार, वेस्टर्न रेलवे के ज़ोनल इलेक्ट्रिक ट्रेनिंग सेंटर के प्रिन्सिपल पी.के. गुप्ता, ब्र.कु. डॉ. निरंजना, मास्टर योगा कोच डॉ. राकेश गिरी गोस्वामी तथा ब्र.कु. नरेन्द्र पटेल।



भिलाई नगर-म.प्र.। 'दो दिवसीय निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी गहन योग तपस्या कार्यक्रम' के दौरान पूरे विश्व को शांति के प्रकम्पन फैलाते हुए ब्रह्माकुमारी बहनें तथा ब्रह्मावत्स।



वणी-महा.। 'बाल संस्कार शिविर' में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. कुन्दा। साथ हैं डॉ. महा कुलकर, मौली संस्था के अध्यक्ष सतीश पिपराले तथा अन्य।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-22-2017

1	2			3	4	5	6	7
8		9		10				
					11			
12	13		14					15
						16	17	
18		19						20
21					22	23		
			24					
25	26		27					
28			29			30		

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

- बड़ा, रोग भले ही....था परंतु मातेश्वरी पड़े (4)
- जो का आत्म नियंत्रण उससे कहीं अधिक (4)
- बेमिसाल था (4)
- समय, काल, पहर (2)
- संगमयुग में शिव बाबा द्वारा ज्ञान वकी शिक्षा मिलती है (4)
- जगदम्बा सरस्वती को.... भी कहते हैं (4)
- संगमयुगी आध्यात्मिक ज्ञान ही.... ज्ञान है (4)
- समय,चक्र (2)
-से मम्मा का जीवन जन सामान्य से उच्च था (4-4)
- एक मीठा लम्बोतर कंद जो सब्जी में काम आता है (3)
- कोई ऐसा कर्म न हो जो बाद में.... करना
- भवत, पुजारी से पूजा कराने वाला व्यक्ति (4)
- पराजित, गले की माला (2)
- अब तुम्हें माया के सामने करनी है (4)
- गम्भीरता और का बैलेंस हो (5)
- मम्मा अपनी उच्च धारणा के कारण.... नाम से प्रसिद्ध हुई (2-2)
- छुट्टी, विश्राम दिवस (4)
- सौ, सैकड़ा (2)
- सुलझाना, भूमि जोतने का यन्त्र (2)
- एक छोटा वाद्ययन्त्र, संकेत सूचक आवाज (2)

बायें से दायें

- बुद्धि, आत्मा के निर्णय शक्ति शांति के प्रकम्पन महसूस होते हैं (4)
- को.... कहते हैं (3)
- थोड़ा, कम, तनिक (2)
- खुशियों से भरा जीवन, हर पल में.... है (3)
- कला का प्रदर्शन करने वाला, विशेष गुणी व्यक्ति (4)
- विशेष योगी, मम्मा ही मातेश्वरी और.... हैं (4)
- नियंत्रण, ज्ञान मार्ग में मन-बुद्धि पर... लगाना जरूरी है (3)
- जब कोई परमयोगी अपने देह का....करता है तो वातावरण में गहन
- सारी दुनिया एक डूबता.... है उसे पार लगाना है (3)
- सहजता, एक दिव्य गुण (4)
- धान की....वर्षा ऋतु में पैदा होती है (3)
- शांति, मानव.... चैन से रहना चाहता है (3)
- नदियों, पहाड़ों, सागर का तट-वर्ती भाग (4)
- अवधपति, अवध के राजा (4)
- सौ वर्ष पूर्ण, सौ साल की अवधि (3)
- ब्र.कु. हरिशंकर यादव, वाराणसी



वलसाड-गुज. | अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु. नलिनी, मुम्बई, भरत भाई, धारासभ्य, ब्र.कु. शकु, ब्र.कु. रंजन, ब्र.कु. रोहित तथा पतंजलि योग विद्यापीठ से प्रीति बहन।



यशवंत नगर-महा. | अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम में डॉ. योगाचार्य हेमंत पाटील को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नन्दा। साथ हैं ब्र.कु. निवेदिता।



गोधरा-गुज. | अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित योग प्रशिक्षण शिविर में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सुरेखा। साथ हैं किरण झवेरी, आई.ए.एस., जिला विकास अधिकारी, पंचमहल, जश्मिका बहन मोदी, डिस्ट्रिक्ट जेन्डर कोऑर्डिनेटर, समर सिंह पटेल, अध्यक्ष, जिला पंचायत, कारोबारी समिति, ब्र.कु. शैलेश तथा हितेन्द्र सोलंकी, योग प्रशिक्षक।



नामली-म.प्र. | शासन द्वारा आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम के अंतर्गत शिक्षक कॉलोनी में वृक्षारोपण करते हुए शासकीय महाविद्यालय की शिक्षिकाएँ बहन पूजा योगी, बेबी तावड़े, ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. स्वाति तथा आंगनवाड़ी की कार्यकर्ताएँ।



संगमनेर-महा. | वनमहोत्सव के दौरान पारेगाव-गडाख गांव में वृक्षारोपण के अवसर पर उपस्थित हैं सरपंच सारंगजी गडाख, ब्र.कु. भारती, ब्र.कु. पदमा तथा अन्य।



पुणे-क्वार्टर गेट | अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम में पुणे मुख्य जनरल पोस्ट ऑफिस के अधिकारी एवं कर्मचारियों को राजयोग का अभ्यास कराते हुए ब्र.कु. अरुणा। साथ हैं ब्र.कु. पल्लवी तथा ब्र.कु. नितिन।

स्व+तंत्र

मनुष्य का जीवन प्राचीन काल से ही स्वतंत्र रहा है। मानवता कभी भी परतंत्रता को स्वीकार नहीं करती है। ये हम सभी का स्वयं का अनुभव भी है। लेकिन हमारी स्वयं की उलझनें, स्वयं के प्रति हमारा स्वयं का दृष्टिकोण हमें उन परतंत्रता की जंजीरों में जकड़ रहा है जो कहीं न कहीं हमारी स्वयं की खुशी और स्वतंत्रता को गायब कर रही है। विकारों की बेड़ियाँ हमारे जीवन को ऐसे बांधे हुए हैं, कि कोई भी आंतरिक व बाह्य औजार उसे खोल नहीं पा रहा है।

मनुष्य का शरीर पंचतत्वों से निर्मित है। इन पंचतत्वों में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश के मिलने से पहले हमारे अंदर पृथ्वी का सबसे सूक्ष्मतम कण जिसे हम परमाणु कहते हैं, दो या दो से अधिक परमाणुओं के मिलने से अणु बनता है। अणु जब अपनी क्रियाशीलता में आता है, तो वो एक मिश्रण के रूप में हमारे शरीर में काम करता है। मिश्रण से कोशिकाओं का निर्माण होता है। इन कोशिकाओं के सम्मिलन से हमारे उत्तक (टिसूज) बनते हैं। इन उत्तकों के एक साथ सम्मिलन से अंग बनता है, और इन अंगों के सम्मिलन से तंत्र का निर्माण होता है। हमारे शरीर में सात तंत्र हैं, जिसमें क्रमशः कंकाल तंत्र, श्वसन तंत्र, परिसंचरण तंत्र आदि आदि हैं। इन तंत्रों का संतुलन हमारे शरीर के सबसे ऊपर हिस्से मस्तिष्क के द्वारा होता है, या जिसे हम कंट्रोल रूम भी कह सकते हैं, वहाँ से होता है। अगर उसमें से एक भी न्यूरोन, एक भी सेल, एक भी टिसू इधर

उधर हो जाए तो शरीर में कोई न कोई हलचल शुरू हो जाती है। मनुष्य हमेशा इस बात से अनभिज्ञ रहता है कि हम कैसे बीमार हो जाते हैं। क्योंकि मस्तिष्क को भी चलाने वाली शक्ति जो तीन ग्लैंड के बीच में स्थित है, जिसको हम मेटा फिज़िकल एनर्जी या पराभौतिक ऊर्जा कहते हैं, उसके द्वारा होता है। दरअसल वही 'स्व' है, जिसको स्व कहो या ऊर्जा कहो या आत्मा कहो, या रूह कहो, स्व वही है। वही स्व इस तंत्र को चलाती है अपने विचार शक्ति के माध्यम से।

उदाहरण के रूप में जैसे हमारा लोकतंत्र है, जो मुख्य नियंत्रक है हमारे देश के विधान का, कानून का, समाज का, राज्य का, लेकिन वो कार्य अच्छी तरह से तभी कर सकता है जब राज्य के प्रतिनिधि अच्छी तरह से अपनी एक-एक ज़िम्मेदारियों को निभायें और उसकी सारी सूचना मुख्य नियंत्रक को दें, तभी व्यवस्था सुचारू रूप से चल सकती है या आगे बढ़ सकती है। वैसे ही हमारे शरीर का तंत्र है, जिसमें आत्मा मुख्य है, या स्व मुख्य है। उसके साथ सम्मिलित शक्तियों में मन बुद्धि संस्कार है। अगर ये तीनों सही रूप से कार्य करते हैं, और उसकी सूचना आत्मा को पहुँचती है, या स्व को पहुँचती है तो वो अच्छी तरह से अपने तंत्र को नियंत्रण में रख सकता है। लेकिन सहयोगियों अर्थात् मन बुद्धि संस्कार के अंदर कुछ बाहरी शक्तियों ने आक्रमण कर दिया है, जिसे हम कहते हैं विकार। ये हमारे इंद्रिय रूपी दलालों के माध्यम से हमारे राज्य में प्रवेश करते हैं, और धीरे-धीरे अपना तबका खुद उस राज्य के ऊपर करते जाते हैं। जैसे आकर्षण, बाहरी दिखावा, लोभ, लालच, मोह आदि आदि घुसपैठिये हमारे अंदर इंद्रियों के माध्यम से आते रहे, और हम उसकी जंजीरों में जकड़ते चले गए। आज आलम यह है कि हमारा जो स्व है या आत्मा है, वो पूरी तरह से तंत्र के वशीभूत है, इसका मतलब है कि मन बुद्धि संस्कार

के वश हम सभी आज इतने ज़्यादा हैं कि हमसे गलत काम ही हो रहे हैं। इस चंगुल से छूटने के लिए हम सभी को कोई रास्ता नहीं दिखाई दे रहा है। कोई ऐसा देशभक्त, क्रान्तिकारी पैदा हो, जो हमें इन विकारों से छुड़ा दे, इनसे हमें आज़ाद करा दे। आपको यह जानकर खुशी तो होती ही है कि भारत पंद्रह अगस्त 1947 को आज़ाद हुआ, लेकिन भारत में रहने वाले लोग क्या आज़ाद हैं! हमें तो शायद नहीं लगता। हम सभी 70वीं स्वतंत्रता दिवस के वर्षगांठ की ओर बढ़ रहे हैं। इतने सालों का अनुभव लेने के बावजूद भी हम बदले नहीं, बदला लेने के चक्कर में रहते हैं।

इस उदाहरण के दौर में एक महापरिवर्तक, विश्व रक्षक भी 1937 में इस धरा पर आया, और अभी भी है, जो अहिंसक है, परम कल्याणकारी है, परम हितैषी है, जो जातिवाद, धर्मवाद सबसे परे है। जो सच्ची स्वतंत्रता दिलाने हेतु प्रयासरत है। स्थूल देश की स्वतंत्रता को 70 साल हुए और परमात्मा को आये हुए 80 वर्ष हो चुक हैं। वो हमारे अंदर घुसे हुए घुसपैठिये काम क्रोध लोभ मोह अहंकार को निकालने हेतु निरंतर प्रयासरत हैं। वो हमारे लिए स्व की आज़ादी को लाने हेतु निमित्त हैं। हम जब तक इस परम रक्षक के सानिध्य में नहीं आ जाते, तब तक अपने आप को उन जंजीरों से छुड़ा नहीं सकते। स्वतंत्रता तो सच में वो है, जिसमें हमें हमारे मन से, तन से, धन से, जन से सबसे सहयोग मिले, कोई बंधन न हो। लेकिन आज हम बंधनयुक्त नहीं हैं, बल्कि पूरी तरह से बंधनयुक्त हैं। हमारा पिता हमें इस बंधन से मुक्त करने के लिए सज्ज है। बस हमें उसके सामने आना है, खड़ा होना है और समर्पण करना है सबकुछ। उसके बाद हम सभी सच्ची स्वतंत्रता को महसूस कर पायेंगे। इस जीवन में रहते हुए भी जीवनबंध से जीवनमुक्ति की तरह बढ़ जायेंगे। तो आओ इस दिवस को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने का बीड़ा उठायें।

सद्भावना से सर्व... - पेज 12 का शेष

उत्थान के लिए मेहनतकर्ता किसानों को आधुनिकता व आध्यात्मिकता का समन्वय रखना आवश्यक है। इस क्षेत्र में ब्रह्माकुमारीज द्वारा किया जा रहा भागीरथी कार्य एक खुली किताब की तरह है।

कृषि और ग्राम विकास प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. तृप्ति बहन ने कहा कि आज इस विश्व में सद्भावना की अनिवार्यता है।

कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. राजू ने आये हुए सभी मेहमानों का हार्दिक स्वागत किया।

संगठन के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि किसान के मन में संकल्प रूपी बीज सकारात्मक हो, तो अनाज भी शक्ति प्रदान करने वाला होता है। जैविक खादों के प्रयोग से अनाज की पौष्टिकता भी उच्च गुणवत्ता वाली होती है।

वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. सुषमा ने कहा कि समाज के हर तबके को मानसिक शान्ति व शक्ति प्राप्त करने के लिए राजयोग का अभ्यास करने की ज़रूरत है। राजयोग मनोबल को बढ़ाने में सहायक है।

वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. गीता ने कहा कि गांव के सर्वांगीण विकास के लिए ग्राम वासियों को एकता के साथ आपसी

सद्भाव, प्रेम, सुख, शान्ति आदि मूल्यों को महत्व देना चाहिए।

दिल्ली मजलिस पार्क से आई कृषि और ग्राम विकास प्रभाग की क्षेत्रीय संयोजिका ब्र.कु. राजकुमारी बहन ने कहा कि निर्माण के लिए मन की भावना को शुद्ध और श्रेष्ठ बना लें। शुद्ध मन से सारी दुनिया को अपनी शुभ भावना प्रदान करें।

कार्यक्रम में प्रभाग के अधिशासी सदस्य ब्र.कु. राजेन्द्र, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. किरण आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। ब्र.कु. सुनीता बहन ने सभी का आभार व्यक्त किया। ब्र.कु. सपना ने मंच का संचालन किया।

परम रक्षक से बंधवायें रक्षासूत्र

राखी का त्योहार जब आने वाला होता है, तो हम सभी इस त्योहार के प्रति, इस पवित्र बंधन के प्रति बहुत निर्मल भाव से इंतजार कर रहे होते हैं। इस त्योहार की महिमा इतनी क्यों है, क्या यह सिर्फ भाई बहन के बीच पवित्र रिश्ते को उजागर करता है, या इसका गुह्य बात से कोई जुड़ाव है? तो हम उस गुह्य रहस्य की ओर बढ़ते हैं और समझते हैं रक्षासूत्र का रहस्य....

ऊपर मुसीबत आती है तो वो सिर्फ एक ही सहारा ढूँढ़ता है, जिसको हम भगवान कहते हैं, उसकी निगाह उसकी तरफ ही जाती है। वो उसे ही अपना सबकुछ मानकर उसी के ऊपर सबकुछ छोड़कर अपना कार्य करता है। लेकिन परमात्मा भी कई सारे शर्तों में बंधा हुआ है, वो बिना शर्त किसी को कुछ भी नहीं देता है। आप भी शायद अपने सम्बंधियों से यही अपेक्षा रखते हैं कि अगर वो ठीक हैं, सही मार्ग पर हैं, हमेशा चाल-चलन व्यवहार सब ठीक है तो वे सबकुछ करने को तैयार हैं। ऐसे ही परमात्मा उनकी रक्षा करने के लिए हमेशा बाध्य है, जो पवित्रता के



आधार से अपने जीवन को संवारते हैं। रक्षाबंधन विशेष रूप से पवित्रता का बंधन है। पवित्रता अर्थात् श्रेष्ठ कर्म, सुखदायी कर्म आदि से सबके जीवन को महका देना, या सुखदायी बना देना और उन कर्मों से दुआयें कमाना। तो सबसे पहले अपने आपको हमें चेक करना है, कि हम कितने पवित्र हैं, कितने श्रेष्ठ कर्म कर रहे हैं, कितना सबको सुख दे रहे हैं, निःस्वार्थ भाव से सेवा कर रहे हैं, उसके आधार से वो परमरक्षक आपको सबकुछ देने के लिए बाध्य हो जाये।

रक्षाबंधन के पावन पर्व पर हम उस परमरक्षक के हाथों से अगर सच में रक्षासूत्र बंधवाना चाहते हैं, तो हमें सर्वप्रथम पवित्रता को अपने जीवन में अपनाना होगा। पवित्रता अर्थात् सच्चाई सफाई ईमानदारी से अपने को सम्पूर्ण रीति से समर्पित करना परमात्मा के प्रति। एक

बार पवित्र बनने की प्रतिज्ञा लेने के बाद उसे भूल से भी न तोड़ना, उसका सम्पूर्ण विश्वास पात्र बनना, जिससे वो आपकी तरफ स्वयं ही आकर्षित हो जाये। दरअसल ये बात किसी पुरुष या स्त्री के लिए नहीं है, भाई या बहन के लिए नहीं है, ये बात सर्व आत्माओं के लिए है। सर्व आत्माओं हेतु है। रक्षा करने के लिए बाध्य करना बहुत सहज है, लेकिन पवित्रता को धारण करना आज लोगों को मुश्किल लगता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में परमात्मा का सानिध्य लेने हेतु बहुत सहज विधि सिखाई जाती है। जिसको हम सहज राजयोग कहते

हैं। इस राजयोग के माध्यम से हम अपनी पवित्रता को कायम रख सकते हैं। निरंतर जागृत अवस्था में हमें ये राजयोग रखता है। बीच बीच में जब हम कभी भूल जाते हैं, तो परमात्मा द्वारा पुनः पुनः ज्ञान वर्षा से फिर से चैतन्य अवस्था को प्राप्त कर जाते हैं। वो अपने सुंदर और शक्तिशाली महावाक्यों से हमें याद दिलाता

है कि आपने हमसे पवित्रता की प्रतिज्ञा की थी, आप भूल तो नहीं गये। ऐसी बातें अगर भगवान आपसे करे तो कैसा लगता है! इसलिए उस पवित्रता को याद दिलाने के कारण ही हम सभी ब्रह्मावत्स आज इतने वर्षों से उस परम रक्षक का रक्षा कवच पहनकर तीव्र गति से आगे बढ़ रहे हैं, और पूरे विश्व को उस परम रक्षक से जुड़वाने की भी कोशिश कर रहे हैं। क्या आप हमारे साथ इसमें सहयोगी बनने के लिए सज्ज नहीं हैं? क्या आप हमारे साथ कदम से कदम मिलाकर रक्षा दिवस को सार्थक करने के लिए, परमात्मा से रक्षासूत्र बंधवाकर अपने जीवन को पूर्णतया सुरक्षित करने में सहयोग नहीं देंगे क्या? तो आइये, एक पवित्र बंधन बांधने के लिए हम सभी एक साथ एकजुट होकर इस अभियान में अपनी अंगुली दें।

हरेक बहन अपने भाई को रक्षाबंधन के दिन रक्षासूत्र बांधती है और कहती है कि हर मुसीबत की घड़ी में उसका भाई उसकी रक्षा करे, ऐसी अपेक्षा रखती है। लेकिन अगर हम इस पूरे दृश्य को अपने सामने लायें तो कई बार देखने में आता है कि बहन जिस भाई को रक्षासूत्र बांधती है वो उसकी उम्र से छोटा होता है। अगर इसको वैज्ञानिक रूप से देखा जाये तो छोटा भाई अपनी बड़ी बहन की रक्षा कैसे करेगा? अगर वो छोटी आयु का है, दुर्बल है, गरीब है, या दूर है, तो वो धन से, तन से अपने बहन की रक्षा करने में असक्षम है, असमर्थ है, है या नहीं! क्या आज के इस दौर में कोई भी पूरी तरह से अपने भाई को लेकर सुरक्षित है, या सुरक्षित महसूस करता है? हमारे हिसाब से तो नहीं। तो ऐसा क्या किया जाए कि हर कोई अपने आप को सुरक्षित महसूस करे और हर समय उसे ये गैरंटी भी मिले कि उसका रक्षक उसके पास पहुँच ही जायेगा।

इस दुनिया में अगर कभी किसी के

‘गणेश’ और हमारा...- पेज 2 का शेष

तर्क को कुतर-कुतर करने के लिए स्वच्छन्द नहीं छोड़ देते। उनका वाहन चूहा विवेक की अविवेक पर विजय का सूचक है।

चूहा चुपके से ही बिल बनाते-बनाते घर में आ जाता है और छिपकर अथवा अंधेरे में कुतरने का काम करता रहता है। ऐसे ही संशय अथवा अविवेक भी अज्ञान अंधकार में आकर बिल में छिपने की तरह अप्रत्यक्ष रूप में अपना काम करना शुरू कर देता है और मनुष्य के ज्ञान की जड़ें खोखली कर देता है। मनुष्य को चाहिए कि संशय की प्रवृत्ति पर काबू पाये।

बुद्धि और सिद्धि अथवा विधि और सिद्धि

गणेश जी के दोनों ओर बुद्धि और सिद्धि नामक उनकी दो पत्नियाँ दिखाई जाती हैं। ये भी क्रमशः ज्ञान और उस द्वारा होने वाली

सफलता की प्रतीक हैं। जो बुद्धिवान होगा अर्थात् सोच-समझकर कार्य करेगा, दूरदर्शिता का प्रयोग करेगा, उसको सिद्धि अथवा सफलता तो होगी ही। सफलता तो ज्ञानवान व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार है।

कई बार गणेश जी के चित्रों में उनके साथ केला फल भी चित्रित किया जाता है, साथ ही लक्ष्मी को भी। केले के पौधे की यह विशेषता है कि उसके ऊपर के पत्ते को हटायें तो उसके नीचे और पत्ता निकल आता है। यदि उसको हटायें तो उसके नीचे एक और पत्ता सामने आ जाता है। अपनी इस विशेषता के कारण केला इस बात का सूचक है कि ज्ञानवान व्यक्ति की बातों में गहराई होती है। उसकी गहराई में जायें तो इसमें एक और बात छिपी होती है। इस बात को देखकर किसी कवि ने कहा है- जैसे केले के पात-पात में पात। तैसे ज्ञानी की बात-बात में बात। अतः

गणपति के साथ केला को चित्रित करने के पीछे ये भाव होता है कि ज्ञानवान व्यक्ति की बातों में बहुत गहराई होती है।

‘लक्ष्मी’ शब्द ‘लक्ष्य’ शब्द से बना है। लक्ष्मी को सदा कमल पर बैठे या खड़े दिखाया जाता है। यहाँ तक कि उसके नामों में से एक नाम कमला भी है। लक्ष्मी वैकुण्ठ के राज्य - भाग्य की परिचायिका है। वो पवित्रता, सुख और शान्ति का मूर्त रूप है, क्योंकि ज्ञानवान व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य भी सम्पूर्ण पवित्रता व शान्ति के जीवन की प्राप्ति करना अथवा कमल पुष्प समान बनना अर्थात् स्वर्ग का सुखकारी स्वराज्य प्राप्त करना होता है। इसलिए गणपति के साथ लक्ष्मी को दिखाना स्वाभाविक है। ऐसे तो गणपति का आध्यात्मिक रहस्य और भी है, लेकिन इन सबको यहाँ स्पष्ट करना सम्भव नहीं है।



भोपाल-म.प्र.। भूपेन्द्र सिंह ठाकुर, कैबिनेट मिनिस्टर, गृह, परिवहन विभाग म.प्र. शासन को मुख्यालय माउण्ट आबू में होने वाले यातायात प्रभाग के सम्मेलन का निमंत्रण देने के पश्चात् चित्र में ब.कु. रानी तथा ब.कु. दिलीप।



अहमदाबाद-इंडिया कॉलोनी। गुरु पूर्णिमा के दिन सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में गुजरात राज्य परिवहन मंत्री वल्लभभाई काकडीया को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब.कु. भानु।



चिक्काबल्लपुर-कर्नाटक। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयुष विभाग द्वारा सर एम. विश्वेश्वरैया स्टेडियम में आयोजित कार्यक्रम में सभी को राजयोग का अभ्यास कराते हुए राजयोगिनी ब.कु. ललिता। अभ्यास करते हुए श्री पूर्णानंद स्वामीजी, विधायक डॉ सुधाकर तथा अन्य गणमान्य जन।



कोपरगाव-महा.। ‘परमात्म अनुभूति भवन’ के उद्घाटन समारोह में उपस्थित हैं तालुका की विधायक सौ. स्नेहलता ताई कोल्हे, राजयोगिनी ब.कु. संतोष, राजयोगिनी ब.कु. वासंती, महानुभाव पंथ के प्रमुख यशराज महाराज, पूर्व पटबन्धरे मंत्री अन्नासाहेब म्हरके, नगरसेवक स्वप्निल निखाड़े, श्री श्री 108 महंत राघवेन्द्रगिरी महाराज तथा ब.कु. सरला।



राजकोट-अवधपुरी। सरदार पटेल सोशल ग्रुप द्वारा आयोजित ‘सरस्वती सम्मान समारोह’ में विद्यार्थियों को शिक्षा में मेडिटेशन का लाभ बताते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. रेखा। मंचासीन हैं ब.कु. कृपाल, सरदार पटेल सोशल ग्रुप के अध्यक्ष महेशभाई संग्रिया तथा अन्य।



राजकोट-रणछोडनगर। गुरु पूर्णिमा के दिन सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. शीतल का शॉल तथा हार पहनाकर सम्मान करते हुए कॉर्पोरेटर अनिल भाई राठोड, प्रिती बहन पनारा, दक्षाबहन बेसदानिया तथा अन्य।

आसक्ति की समाप्ति से ही शांति की प्राप्ति

गतांक से आगे...

परमात्मा ने चार विकल्प दिए हैं। अगर तुम मेरे में मन को एकाग्र नहीं कर सको तो योगाभ्यास करो। खास बैठक लगा करके अभ्यास करो। जितनी शारीरिक एकाग्रता होगी उतनी मन की एकाग्रता को लाना सहज हो जाएगा। अगर बैठकर भी करना मुश्किल है, तो सेवा करो- यज्ञ सेवा। अर्थात् अनेक आत्माओं को जीवन शुद्ध बनाने की प्रेरणा देना, ये सबसे बड़ी सेवा है। किसी को आत्म उन्नति का मार्ग बताना, ये सबसे बड़ी सेवा है। ये सेवा कर्म करो। उसके लिये समय निकालो। वो भी अगर नहीं कर सके तो मन, बुद्धि को एकाग्र कर आत्म स्थिति में स्थित हो जाओ। ये चार विकल्प बतायें हैं परमात्मा ने। इनमें जो भी सहज हो। लेकिन निराकार की ही आराधना, उपासना करने की प्रेरणा दी है। फिर कहा कि अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है। इसलिए ज्ञान को समझो। ज्ञान से ध्यान श्रेष्ठ है और ध्यान से सर्व कर्म फल का त्याग श्रेष्ठ है। जो कर्म करो उसे भूल जाओ। समर्पण कर दो ईश्वर को अर्पण कर दो, ये फल भी तुम्हें अर्पण। जो फल इसका मिलना है वो भी उसको अर्पण कर दो। कर्म फल के त्याग से तत्काल ही शांति प्राप्त हो जाती है। आसक्ति खत्म हो गयी तो मन शांत हो जाता है। फिर भगवान ने प्रिय आत्मा के लक्षण बताए कि जो किसी से द्वेष नहीं करता और सर्व के

प्रति मित्रता भाव रख कृपालू है, वह भगवान को प्रिय है। जो ममत्व बुद्धि और अहंकार रहित है, वह आत्मा भगवान को प्रिय है। जो सदा संतुष्ट, दृढ़ और संयमी है। वह भगवान को अति प्रिय आत्मा है। जो समर्पण बुद्धि है और कर्मयोगी है, वह भगवान को प्रिय है। जो न स्वयं क्रोध करता है और न किसी को क्रोधित करता है वह प्रिय है। जो ईर्ष्या, भय और विषाद इन दुर्गणों से अलिप्त है, वही भगवान को अति प्रिय है। जो निरपेक्ष, पवित्र और दृढ़ सकल्पधारी है, वह भगवान को अतिप्रिय है। पुरुषार्थ में दृढ़ सकल्पधारी तो बनना ही है, साथ ही पवित्र मन की भावनाओं को भी रखना ही है। जो न अति हर्ष और न शोक, न कभी कोई बात में इच्छा रखता है, वह भगवान को अतिप्रिय है। जो कर्म में शुभ और अशुभ का त्यागी है, वो भगवान को अतिप्रिय है। जो शत्रु, मित्र, मान, अपमान, सुख-दुःख, निंदा-स्तुति में समान एवं क्षमाशील है, वह भगवान को अतिप्रिय है। जो

अनासक्त मितभाषी और दूषित संगति से सदैव मुक्त है, वह भगवान को अतिप्रिय है। जो धर्ममय अमृत पथ का श्रद्धा से अनुसरण करते हैं वह भगवान को अतिप्रिय हैं। इतने लक्षण वाले भगवान को अतिप्रिय लगते हैं। इसलिए कर्मयोगी माना इन लक्षणों को जितना हो सके, उतना अपने जीवन में विकसित करते जाए। अपने आपको भगवान के प्रिय बनाते चल। इस प्रकार बारहवें अध्याय में परमात्मा ने अपने प्रिय अर्जुन के प्रश्नों के उत्तर दिये। साकार भक्ति श्रेष्ठ से निराकार भक्ति श्रेष्ठ है। फिर भगवान की प्रिय आत्मा के लक्षण बताए हैं। उन लक्षणों के आधार पर कैसे हर संघर्ष में विजयी बनना है। ये प्रेरणा दी है। अब अपने मन को बाह्य सभी बातों से समेट लें। योगाभ्यास के लिए अपने मन को शुद्ध संकल्प देते जायेंगे, दृढ़तापूर्वक बैठेंगे, जितनी शारीरिक एकाग्रता को हम बना सकते हैं, उतनी मन की एकाग्रता को ले आना सहज और स्वाभाविक होगा। इसलिए दृढ़ता पूर्वक अभ्यास करें। साथ ही साथ मन को परमात्मा की स्मृति में ले चलते हैं। अपने मन को शुद्ध संकल्प देते चलें। अंतर्चक्षु, धीरे-धीरे खुलता जा रहा है। परमात्मा के दिव्य स्वरूप को हम सभी ने जान लिया समझ लिया है। अब उस अंतर्चक्षु के सामने परमात्मा के दिव्य स्वरूप पर, हम अपने मन और बुद्धि को एकाग्र करेंगे।

- क्रमशः



राजकोट-गुज.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित हैं पूर्व केन्द्रीय मंत्री, सांसद सभ्य मोहन कुंडारीया, गुजरात गौ सेवा आयोग के ट्रस्टी डॉ. वल्लभभाई कधीरिया, राजयोगिनी ब्र.कु. भारती, ब्र.कु. रेखा, ब्र.कु. भगवती, ब्र.कु. अंजु तथा अन्य।



रीवा-म.प्र.। 'त्रिदिवसीय मधुर मधुमेह' शिविर का उद्घाटन करते हुए महापौर ममता गुप्ता, उपमहानिरीक्षक आर.पी. सिंह, डॉ. वालसलन नायर, माउण्ट आबू, वरिष्ठ पत्रकार रमाकान्त द्विवेदी, ब्र.कु. निर्मला तथा अन्य।



सोहेला-गुज.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यक्रम के दौरान बी.डी.ओ. सस्मिता शारिनी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुशीला।



जबलपुर-कटंगा कॉलोनी। विश्व योग दिवस के अवसर पर आयोजित 'सामूहिक राजयोग अभ्यास कार्यक्रम' में राजयोग की गहन अनुभूति करते हुए ब्र.कु. बहनें तथा सेवाकेन्द्र के भाई बहनें।



जकातवाड़ी-सातारा(महा.)। साप्ताहिक कोर्स के उद्घाटन कार्यक्रम में सरपंच सौ सीता जाधव को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. शांता।



धमतरी-छ.ग.। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर आयोजित प्रदर्शनी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ए.एस.पी. कमलेश चन्देल, डी.एस.पी. मीता पवार, पार्श्व नील पटेल, ट्रैफिक प्रभारी सत्यकला रामटेके तथा ब्र.कु. सरिता।

ख्वालों के झाड़ने में...

मन और मकान को वक्त वक्त पर साफ करना बहुत ज़रूरी है, क्योंकि मकान में बेमतलब सामान और मन में बेमतलब गलतफहमियाँ भर जाती हैं।

यदि हम गुलाब की तरह खिलना चाहते हैं, तो काँटों के साथ तालमेल की कला सीखनी होगी।

तालाब एक ही है, उसी तालाब में हंस मोती चुनता है और बगुला मछली। सोच-सोच का फर्क होता है। आपकी सोच ही आपको बड़ा बनाती है।

आवश्यक सूचना

एस.एल.एम. ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज/ग्लोबल हॉस्पिटल स्कूल ऑफ नर्सिंग के लिए 4 बी.के. किचन असिस्टेंट की अतिशीघ्र आवश्यकता है।
योग्यता : हाई स्कूल
कार्यानुभव : कम से कम 2 वर्ष का कुकिंग एक्सपीरियंस

संपर्क करें : एस.एल.एम. ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज/ग्लोबल हॉस्पिटल स्कूल ऑफ नर्सिंग, शिवमणि होम के पास, तलहटी, आबू रोड
मो. : 8432403244/94141413717
ई.मेल : nntagrwal@gmail.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'



सूचना : अगस्त 2017 से ओमशान्ति मीडिया पत्रिका की सदस्यता शुल्क में मामूली सी बढ़ोत्तरी की गई है जो कि वार्षिक शुल्क 200 और तीन वर्ष का 600 किया गया है।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय- ओमशान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088, Email- omshantimedia@bkivv.org, mediabkm@gmail.com, Website- www.omshantimedia.info
सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये, आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

कथासरिता

पुरुषार्थ ही सर्वोपरि

विंध्याचल प्रदेश के राजा के दरबार में तीन व्यापारी अपनी फरियाद लेकर उपस्थित हुए और बोले-“महाराज! हम आपके राज्य में व्यापार करने आ रहे थे कि हमें मार्ग में डाकुओं ने लूट लिया। हमारे पास लेशमात्र भी धन नहीं है। कृपया हमारी मदद कीजिए।” राजा ने उन तीनों को एक-एक बोरी गेहूँ देने का आदेश दिया। गेहूँ देते समय राजा बोले - “इस बोरी के गेहूँ को स्वयं ही साफ करना और स्वयं ही उपयोग में लाना। न किसी को देना, न किसी की मदद लेना। एक माह बाद मुझसे पुनः मिलना।” बोरी लेकर तीनों व्यापारी चले गए। उनमें से दो व्यापारी आलसी थे, तो उन्होंने गेहूँ साफ करने का श्रम न करते

हुए उसे बेच दिया। तीसरा व्यापारी परिश्रमी था, उसने गेहूँ साफ करना शुरू किया तो उसे बोरी में नीचे एक अनगढ़ हीरा मिला। उसने उसे तराशकर अपने पास रख लिया। एक माह बाद तीनों व्यापारी राजा के समक्ष हाज़िर हुए तो आलसी व्यापारियों ने राजा से पुनः धन की मांग की, परंतु तीसरे व्यापारी ने तराशा हुआ हीरा राजा को भेंट किया। राजा बोले-“यह तुम्हारा ही है। इसे बेचकर नया कारोबार आरंभ करो।” इसके बाद राजा दूसरे व्यापारियों से बोले - “ऐसे ही रत्न तुम्हारी बोरियों में भी थे, परंतु श्रम का अनादर करने के कारण तुम उससे वंचित रह गए।” सत्य यही है कि पुरुषार्थ के अभाव में मनुष्य दीन-हीन बना रहता है।

जीवन जीने का मूलमंत्र

महात्मा बुद्ध ने अपने शिष्यों को उपदेश देते हुए कहा - “ देश में अकाल पड़ा है। लोग अन्न एवं वस्त्र के लिए तरस रहे हैं। उनकी सहायता करना हर मनुष्य का धर्म है। आप लोगों के शरीर पर जो वस्त्र हैं, उन्हें दान में दे दें।” यह सुनकर अनेक लोग उठ गए, पर उन शिष्यों में से एक निरंजन वहीं बैठा रहा। उसने सोचा कि मेरे शरीर पर तो एक ही वस्त्र है। इसे दे दूंगा तो नग्न होना पड़ेगा। फिर उसने सोचा कि मनुष्य बिना वस्त्र के पैदा होता है और बिना वस्त्र के चला जाता है। यह सोचते ही उसने अपना उत्तरीय

- धोती उतारकर महात्मा बुद्ध के चरणों में डाल दिया। महात्मा बुद्ध ने निरंजन से पूछा - “ पुत्र! तुम्हें अपने वस्त्र देने में कष्ट तो नहीं हुआ?” निरंजन ने उत्तर दिया- “महात्मन! थोड़ा कष्ट तो हुआ, पर देने के भाव से जो संतुष्टि मिली, उसने पहले जन्म लिए लोभ का संवरण कर लिया।” महात्मा बुद्ध बोले- “ एक वस्त्र के त्याग ने तुम्हारे मन में संतुष्टि को जन्म दिया तो सोचो यदि सर्वस्व प्रभु को अर्पित कर दोगे तो कितनी गहन संतुष्टि जन्म लेगी।” निरंजन को जीवन जीने का मूलमंत्र मिल गया था।

एक राजा का जन्म दिन था। सुबह जब वह घूमने निकला तो उसने तय किया कि वह रास्ते में मिलने वाले सबसे पहले व्यक्ति को आज पूरी तरह से खुश व सन्तुष्ट करेगा।

उसे एक भिखारी मिला। भिखारी ने राजा से भीख मांगी तो राजा ने

भिखारी की तरफ एक तांबे का सिक्का उछाल दिया। सिक्का भिखारी के हाथ से छूट कर नाली में जा गिरा। भिखारी नाली में हाथ डालकर तांबे का सिक्का ढूँढ़ने लगा। राजा ने उसे बुलाकर दूसरा तांबे का सिक्का दे दिया। भिखारी ने खुश होकर वह सिक्का अपनी जेब में रख लिया और वापिस जाकर नाली में गिरा सिक्का ढूँढ़ने लगा। राजा को लगा कि भिखारी बहुत गरीब है।

उसने भिखारी को फिर बुलाया और चांदी का एक सिक्का दिया। भिखारी ने राजा की जय-जयकार करते हुए चांदी का सिक्का रख लिया

परमात्म कृपा का सदुपयोग

और फिर नाली में तांबे वाला सिक्का ढूँढ़ने लगा। राजा ने उसे फिर बुलाया और अब भिखारी को एक सोने का सिक्का दिया। भिखारी खुशी से झूम उठा और वापिस भागकर अपना हाथ नाली की तरफ बढ़ाने लगा। राजा को बहुत बुरा लगा। उसे खुद से तय की गयी बात याद आ गयी कि ‘पहले मिलने वाले व्यक्ति को आज खुश एवं सन्तुष्ट करना है।’

उसने भिखारी को फिर से बुलाया और कहा कि मैं तुम्हें अपना आधा राज-पाट देता हूँ। अब तो खुश व सन्तुष्ट हो जाओ।

भिखारी बोला - ‘सरकार! मैं तो खुश और संतुष्ट तभी हो सकूंगा, जब नाली में गिरा हुआ तांबे का सिक्का भी मुझे मिल जायेगा।’ हमारा हाल भी उस भिखारी जैसा ही है। हमें परमात्मा ने मानव रूपी अनमोल खज़ाना दिया है और हम उसे भूलकर संसार रूपी नाली में तांबे के सिक्के निकालने के लिए जीवन गंवाते जा रहे हैं। इस अनमोल मानव जीवन का हम सही इस्तेमाल करें तो हमारा जीवन धन्य हो जायेगा।

मान क्या और अपमान क्या!

स्वामी रामतीर्थ अमेरिका प्रव्रज्या हेतु पहुँचे हुए थे। उनका उद्बोधन प्रसिद्ध चिंतकों व विचारकों के मध्य हुआ तो सभी ने एक स्वर में उनके अदभुत व्यक्तित्व एवं प्रकांड पांडित्य की प्रशंसा की। उद्बोधन के पश्चात् वे जिन महिला के घर रुके हुए थे, उनके घर पहुँचे तो उन महिला से बोले - “बहन! आज ईश्वर ने इस नाचीज़ को अन्यथा ही बहुत प्रशंसा दिलवाई।” कुछ दिनों उपरांत वे न्यूयॉर्क शहर के ब्रॉक्स क्षेत्र से गुज़र रहे थे कि वहाँ उनकी वेशभूषा को देखकर कुछ अराजक तत्वों की भीड़ लग गई।

उनमें से कुछ उन पर छींटाकशी करने लगे तो कुछ ऐसे भी थे, जो अन्यथा ही उनके साथ दुर्व्यवहार करने लगे। घटना की खबर जब महिला को लगी तो वे कुछ साथियों को लेकर स्वामी जी को लेने पहुँचीं। रामतीर्थ उसी निर्विकार भाव से बोले - “बहन! आप हस्तक्षेप न करो। आज ईश्वर का अपने इस भक्त को अपमान से भेंट कराने का मन है। भगवान के भक्त के लिए मान क्या और अपमान क्या?” श्रीमद्भगवद्गीता में जिस स्थितप्रज्ञ का वर्णन है, उस स्वरूप का दर्शन उनमें सबको उन क्षणों में हुआ।

शक्ति का प्रयोग विवेकसंगत

श्रुतायुध ने भगवान शिव की तपस्या करके उनसे ऐसी गदा प्राप्त की, जिसका प्रहार त्रिलोक में किसी के लिए सह पाना संभव नहीं था। गदा देते समय भगवान शिव ने श्रुतायुध को आगाह किया कि गदा का उपयोग मात्र सत्कार्यों में किया जा सकता है, यदि व्यक्तिगत राग-देष की पूर्ति के लिए इसका उपयोग हुआ तो यही गदा उसकी मृत्यु का कारण बनेगी। महाभारत के युद्ध में श्रुतायुध को अर्जुन के सामने लड़ने आना पड़ा। श्री कृष्ण को श्रुतायुध की गदा के विषय में ज्ञात था और वे जानते थे कि

यदि वह गदा चली तो अर्जुन उस प्रहार को झेल न सकेगा। अतः श्रीकृष्ण श्रुतायुध को देखकर हँस पड़े। श्रुतायुध को लगा कि संभवतया श्रीकृष्ण उसे कुरूप समझकर उस पर हँस रहे हैं। क्रोध में वह अपना संयम खो बैठा और भगवान शिव की चेतावनी भूल गया। उसने वह गदा श्रीकृष्ण को लक्ष्य कर फेंकी, परंतु गदा ने लौटकर श्रुतायुध का ही वध कर दिया। शक्तियों का उपयोग विवेक-सम्मत तरीके से ही किया जाना चाहिए, अन्यथा दंड का भागी बनना पड़ता है।



इंदौर। केन्द्रीय मंत्री कलराज मिश्र द्वारा ‘अल्मा-राष्ट्रीय उत्कृष्टता पुरस्कार-2017’ प्राप्त करते हुए राजयोगी ब्र.कु. सूर्य, माउण्ट आबू। साथ हैं डॉ. एस.एन. सुब्बाराव, गांधीवादी नेता, डॉ. संतोष शुक्ला, निदेशक, अल्मा पुरस्कार, ब्र.कु. शाशि, ब्र.कु. उषा, ब्र.कु. संदीप तथा अन्य।



उमरौड-महा। वन महोत्सव में आने पर राज्य के वन, वित्त, प्लानिंग मंत्री सुधीर जी मुनगंटीवार का स्वागत करते हुए ब्र.कु. रेखा।



इंदौर-ओ.एस.वी। आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् श्रीमति अंजलि, प्रिन्सीपल, स्कूल ऑफ नर्सिंग को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. नारायण तथा ब्र.कु. प्रमिला।



सूरत-अडाजन। ‘वृद्धत्व एक सहज परिवर्तन’ सेमिनार का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए सीनियर सिटिज़न प्रेसीडेंट शंकर भाई रावल, सूर्यकांत भाई शाह, कनुभाई पारेख, कृतिभाई पंचवगर, ब्र.कु. डॉ. महेश भाई तथा ब्र.कु. दक्षा।



ब्रह्मपुरी-महा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम के दौरान गणमान्य मेहमानों को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बहनें।



नवी मुम्बई-पनवेल। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विसुपुते कॉलेज, न्यू पनवेल, नवी मुम्बई में ‘योगासन, प्राणायाम और मेडिटेशन’ कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. डॉ. शुभदा नील।

हम सब कुछ दिनों में ही किसी प्रयोग का परिणाम चाहते हैं। इतनी जल्दी क्यों है आखिर हमें! जो पिछला आपने किया, उसका परिणाम क्या आपको तुरंत मिल गया। उसमें भी तो समय लगा ना। तो जब समय लग रहा है, तो प्रयोग में भी तो समय लगेगा ना, और वो इस बात पर निर्भर करेगा कि प्रयोग करने वाले की फ्रिक्वेन्सी क्या है।



यह बात आज वैज्ञानिक रूप से सिद्ध की जा चुकी है कि अगर एक साधारण विचार आपके मन में आये, चाहे वो सकारात्मक हो, चाहे वो नकारात्मक, उसका परिणाम तीन से चार महीने में सबके समाने आ ही जाता है। चाहे उस विचार की फ्रिक्वेन्सी कम से कम हो। तो अभी जो कुछ भी आपके साथ आज के

समय में घटनायें घट रही हैं, या कुछ भी ऊपर-नीचे हो रहा है, तो वो आज का नहीं है। पिछले तीन चार महीने पहले का है, या फिर साल का भी हो सकता है। यहाँ इस बात पर ज़ोर देकर हम उल्लेख करना चाहेंगे कि कोई भी यहाँ पिछले जन्म की बातों को ना जोड़े तो अच्छा है। इसके पहले हम चाहेंगे कि आप अपने साथ एक प्रयोग करके देख लें कि जब आप भूतकाल की बातें या पास्ट की बातें सोचते हैं तो सोचते कब हैं, वर्तमान में बैठकर ना। क्या वो बात पूर्व जन्म की है, या तो दस दिन पहले की होगी, या बीस दिन, या एक महीना, या तीन महीना, यही ना। तो उस बात को आज ही क्यों आपके पास आना था। क्योंकि पहले आपने कभी ना कभी इसे सोचा है। इसलिए हम बार-बार कह रहे हैं कि पूर्व जन्म की घटनायें तो बहुत दूर की बात है, हम तो अभी की बात कर रहे हैं। इसलिए बहुत ध्यान देने की ज़रूरत है कि आप क्या सोच रहे हैं, किसके बारे में सोच रहे हैं, कितने समय से सोच रहे हैं, वो आने वाले समय में

ऊर्जा प्रवाह फॉर्मूला

फलीभूत होगा ही। यदि आपने किसी व्यक्ति के साथ गहरा मोह रखा, रहा है। आपको हम बता दें, कि एक फॉर्मूला है कि 'एनर्जी फ्लोज़, व्हेयर



उसके साथ गहरा लगाव हो गया, तो चार से छः महीने के अंदर उसकी सारी बीमारियाँ, परिस्थितियाँ, उसके घर की बातें, आर्थिक बातें, सामाजिक बातें, सब आपके पास आ जायेंगी, और ये कोई समझ नहीं पा

योर अटेंशन गोज़', जहाँ हमारा ध्यान गया, वहाँ की सारी ऊर्जा, नकारात्मक या सकारात्मक, सब हमारे पास आ जायेगी, ये निश्चित रूप से संभव है, और यही आम इंसान के साथ हो रहा है। उनको

लगता है कि मैंने अभी तक ऐसा तो कोई कर्म नहीं किया। लेकिन अगर किसी व्यक्ति के साथ लगाव है, जुड़ाव है तो उसका सबकुछ आपके पास है। अगर आपको इतिहास की एक घटना पता हो कि हुमायूँ की एक बार तबियत बहुत खराब हुई और सभी हकीमों ने हाथ खड़े कर दिए तो उसके पिता बाबर ने दिल से बैठकर गुहार लगाई कि इसकी सारी बीमारियाँ मुझे लग जाए, और वो उसे लग गई। क्योंकि वो हुमायूँ को ज़िंदा देखना चाहता था, वो उससे बहुत प्यार करता था। ये तो कहानी है, लेकिन प्रत्यक्ष रूप में भी परमात्मा हमें बार-बार अटेंशन दिला रहे हैं कि किसी देह या देह के सम्बंधी के साथ अपना लगाव नहीं रखो, नहीं तो विकर्म या पापकर्म बन जायेंगे और आप इससे कभी निकल नहीं पायेंगे।



डॉ. कु. अनुज, दिल्ली

उपलब्ध पुस्तकें

जो आपके जीवन को बदल दे



प्रश्न: भक्त श्रीकृष्ण को भगवान का ही रूप मानते हैं। उनकी सभी कहानियों से ये भी स्पष्ट होता है कि उनके पास अनंत शक्तियाँ थीं, क्या आप भी उन्हें भगवान मानते हैं?
उत्तर: ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में जो ज्ञान दिया जाता है वो स्वयं ज्ञान सागर निराकार परमात्मा ने ब्रह्मा के द्वारा दिया, वो ही ज्ञान सम्पूर्ण सत्य है और मनुष्य को पतित से पावन बनाने वाला है। ज्ञान देते हुए उन्होंने बताया कि किसी भी देहधारी को भगवान नहीं कहा जाता, जबकि श्रीकृष्ण को तो अपना देह है। उन्होंने जन्म भी लिया और देह भी छोड़ा, जबकि परमात्मा तो जन्म मरण से न्यारे हैं। इसलिए श्रीकृष्ण भगवान नहीं परंतु भगवान के समान अवश्य हैं, नेक्स्ट टू गॉड हैं।

जब कोई भी आत्मा सम्पूर्ण पवित्र बन जाती है तो वह बहुत शक्तिशाली हो जाती है। यही रहस्य है श्रीकृष्ण के शक्तिशाली होने का, लेकिन उनकी अलौकिक शक्ति मनुष्यों के संहार के लिए नहीं बल्कि दुर्गुणों और आसुरी शक्तियों के संहार के लिए है।

प्रश्न: श्रीकृष्ण जी के बारे में ये जो मान्यतायें प्रचलित हैं कि उनका जन्म जेल में हुआ और जन्म के समय फूलों की बरसात हुई, जेल के ताले खुल गए और बचपन में ही उन्होंने अनेक असुरों का संहार किया, इनमें

से कुछ बातें बड़ी काल्पनिक सी लगती हैं, क्या आप इन बातों से सहमत हैं?

उत्तर: सत्य तो ये है कि श्रीकृष्ण के बारे में पुराणों आदि में जो कुछ भी लिखा है, उनसे सभी विद्वान आदि भी सहमत नहीं हैं। किसी भी महापुरुष के चरित्र के साथ बाद में अनेक बातें जुड़ जाया करती हैं, फिर श्रीकृष्ण जी तो इस सृष्टि के



मन की बातें

- राजयोगी ब.कु. सूर्य

महानायक हैं। उनके बारे में कई लेखकों ने कुछ ऐसी-ऐसी बातें भी जोड़ दी हैं, जो हूबहू वैसी नहीं हैं। असुरों आदि के विनाश की जो बातें लिखी हैं, ये वास्तव में आसुरी वृत्तियों के विनाश की बात है।

श्रीकृष्ण, जिनकी भक्ति में बहुत पूजा हो रही है, वो तो सतयुग के सर्वश्रेष्ठ देवता थे, जो कि बाद में चलकर श्रीनारायण के रूप में सिंहासन पर बैठे, वे सम्पूर्ण पवित्र, सम्पूर्ण अहिंसक और सर्व शक्तियों से सम्पन्न थे। उनके काल में असुर होते ही नहीं। ऐसा लगता है कि द्वापर के

अंत में इसी नाम से कोई अति शक्तिशाली और दिव्य पुरुष यहां पर थे, उन दोनों के चरित्र को मिला दिया गया है। क्योंकि सतयुग में किसी के संहार की ज़रूरत नहीं होती, अपितु द्वापर के अंत में कुछ आसुरी शक्तियाँ प्रबल हो जाती हैं।

श्रीकृष्ण जब सतयुग के आदि में इस धरा पर अवतरित हुए तो प्रकृति ने उनका स्वागत किया और फूलों आदि

की बरसात हुई, परन्तु उनका जन्म जेल में नहीं, सोने के महल में हुआ था। जो कंस आदि के वध की और उनके माता-पिता को जेल में रखने की कहानियाँ हैं, ऐसा लगता है कि इनके पीछे कुछ आध्यात्मिक रहस्य हैं।

प्रश्न: ब्रह्माकुमारीज़ में हम हर जगह ये लिखा पाते हैं कि श्रीकृष्ण आ रहे हैं, हम भी ये पढ़ते-पढ़ते, सुनते-सुनते थक गए हैं, लेकिन श्रीकृष्ण का कोई अता-पता नहीं, वे आएंगे भी या नहीं, या ये आपके प्रचार का ही साधन मात्र है?

उत्तर: ज्ञान सागर परमात्मा ने जब प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रवेश किया तब सर्वप्रथम उन्हें ही स्थापना और विनाश का सम्पूर्ण साक्षात्कार करा दिया था और कहा था कि अब तुम

गहन तपस्या करो और मेरा माध्यम बन जाओ। स्वयं भगवान ने ही ये महावाक्य उच्चारें थे कि आने वाले महाभारी महाभारत युद्ध द्वारा विनाश के बाद श्रीकृष्ण का इस धरा पर आगमन होगा और ये धरा स्वर्ग बन जायेगी।

श्रीकृष्ण तो जल्दी ही आना चाहते हैं, लेकिन लोग सच्चे मन से उनका आह्वान नहीं करते। इसका बड़ा गुह्य अर्थ है। विषय-वासनाओं में लिप्त आत्माओं के आह्वान पर वो देवात्मा नहीं आयेंगे। उनका आह्वान करने के लिए तो स्वयं को पावन बनाना होगा, देवत्व से सम्पन्न करना होगा। यही कारण है कि वो महान देवात्मा सभी के पवित्र होने का इंतज़ार कर रही है। दूसरी बात, उनका आगमन कलियुग की इस तमोप्रधान और पाप से भरी दुनिया में नहीं हो सकता। उनके लिए तो प्रकृति और मनुष्य दोनों का सम्पूर्ण पवित्र होना आवश्यक है।

तो जल्दी-जल्दी आप भी पवित्र बन जाइये और इस तरह जब अनेक मनुष्यात्मायें पवित्र बन जायेंगी तो इस कलियुगी सृष्टि का विनाश हो जायेगा और ये संसार देवताओं के आगमन के लिए तैयार हो जायेगा। हमें पूर्ण विश्वास है कि अब शीघ्र ही आपके इंतज़ार की घड़ियां समाप्त हो जायेंगी और जल्दी ही श्रीकृष्ण इस धरा पर आ जायेंगे।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com



नवी मुम्बई-वाणी। महानगर पालिका की ओर से चालीस हजार नये वृक्ष लगाये जाने के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज को भी आमंत्रित किये जाने पर प्रियदर्शनी उद्यान में वृक्षारोपण करते हुए मेयर सुधाकर सोनावने, पूर्व सांसद संजीव नाइक, ब्र.कु. शीला, कॉर्पोरेटर प्रकाश मोरे तथा अन्य गणमान्य लोग।



रायपुर-छ.ग.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित योग महोत्सव का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए माउण्ट आबू से ज्ञानामृत के प्रधान सम्पादक ब्र.कु. आत्मप्रकाश, गृह सचिव, आई.पी.एस. अरुण देव गौतम, क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला, ब्र.कु. सविता तथा ब्र.कु. रश्मि।



पन्ना-म.प्र.। मूल्यनिष्ठ मीडिया संगोष्ठी में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सीता। मंचासीन हैं प्रो. कमल दीक्षित, जागरण के वरिष्ठ पत्रकार अरुण सिंह, सा. छत्रसाल कॉलेज के हिन्दी विभाग के प्राध्यापक प्रो. एस.एस. राठौर, नवभारत के संवाददाता जगदीश नामदेव तथा ब्र.कु. शांतनु, माउण्ट आबू।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी के दिन श्री कृष्ण का जन्म दिन भारत के हर नगर में बहुत ही उत्साह और उल्लास से मनाया जाता है। इस दिन स्थान-स्थान पर देवताओं में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण की मधुर चर्चा होती है। भारतवासियों को श्रीकृष्ण बहुत प्रिय हैं क्योंकि उनका जीवन और उनका कार्य-व्यवहार बहुत पवित्र और मन को लुभाने वाला था। उनकी सतोगुणी काया, सौम्य चितवन, हर्षितमुखता और उनका शीतल स्वभाव सबके मन को मोहने वाला था।

श्रीकृष्ण का जन्म 'धन्य' था

श्रीकृष्ण के जन्म को लोग बहुत ही 'धन्य' मानते हैं और इस कारण उनके जन्म स्थान आदि का वर्णन भी 'धन्य मथुरा', 'धन्य गोकुल' इत्यादि शब्दों में करते हैं। उनके जन्म और उनकी किशोरावस्था और बाद के भी सारे जीवन को लोग दैवी जीवन मानते हैं। उन्हें श्रीकृष्ण इतने महान और प्यारे लगते हैं कि "मोर मुकुट धर मुरली सोहे" आदि पदों से वे उनके श्रृंगार का भी वर्णन करते हैं। परन्तु फिर भी श्रीकृष्ण के जीवन में जो मुख्य विशेषतायें थीं और जो अनोखी प्रकार की महानता थी, उसको लोग आज यथार्थ रूप में और स्पष्ट रीति से नहीं जानते। उदाहरण के तौर पर वे यह नहीं जानते कि श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व इतना आकर्षक क्यों था और वे पूज्य श्रेणी में क्यों गिने जाते हैं? पुनश्च, उन्हें यह भी ज्ञात नहीं है कि श्रीकृष्ण ने उस उत्तम पदवी को किस उत्तम पुरुषार्थ से पाया था। अतः हम यहाँ इन रहस्यों का कुछ संक्षिप्त वर्णन करेंगे क्योंकि इन रहस्यों का ज्ञान अत्यावश्यक है।

गायन-योग्य और पूजने योग्य जीवन में अन्तर

किसी नगर या देश की जनता जन्म-दिन उन्हीं का मनाया करती है जिनके जीवन में कुछ महानता रही हो। परन्तु आप देखेंगे कि महान् व्यक्ति भी दो प्रकार के हुए हैं। एक तो वे जिनका जीवन जन-साधारण से काफ़ी उच्च तो था परन्तु फिर भी उनकी मनसा पूर्ण अविकारी न थी, उनके संस्कार पूर्ण पवित्र न थे और उनकी काया सतोप्रधान तत्वों की बनी हुई न थी। उन्हें देवता नहीं माना जा सकता, क्योंकि उनका जन्म अपवित्र रीति (मैथुनी रीति) से

धन्य हैं श्रीकृष्ण और उनका जीवन

माता-पिता की काम-वासना के परिणामस्वरूप हुआ था। कुछ विशेष गुणों और कर्तव्यों के कारण ऐसे व्यक्तियों का गायन तो सारे संसार में होता है परन्तु पूजन नहीं होता क्योंकि पूजा केवल देवी-देवताओं की या देवों-के-देव परमपिता परमात्मा की ही होती है। दूसरे प्रकार के व्यक्ति वे हैं जो पूर्ण निर्विकारी थे; जिनके संस्कार सतोप्रधान थे और जिनका जन्म भी काम विकार से न होकर योगबल द्वारा हुआ था। ऐसे व्यक्तियों को 'देवता' कहा जाता है; उनका जीवन गायन-योग्य भी होता है और पूजन-योग्य भी। श्रीकृष्ण और श्रीराम ऐसे ही पूजन-योग्य व्यक्ति थे। परन्तु श्रीकृष्ण के बारे में यह महत्वपूर्ण रहस्य लोग नहीं जानते। हालांकि इसी कारण ही उनके व्यक्तित्व में विशेष आकर्षण था और उनके जीवन में दिव्यता थी।

ध्यान देने योग्य बात है कि पहले प्रकार के व्यक्तियों का जीवन 'बाल्यकाल' से ही गायन या पूजने के योग्य नहीं होता बल्कि वे बाद में कोई उच्च कार्य करते हैं जिसके कारण देशवासी या नगरवासी उनका जन्म-दिन मनाते हैं। परन्तु श्रीकृष्ण तथा श्रीराम आदि देवता तो बाल्यावस्था से ही महात्मा थे; वे कोई सन्यास करने या शिक्षा-दीक्षा लेने के बाद पूजने के योग्य नहीं बने थे। आपने देखा होगा कि उनके बाल्यावस्था के चित्रों में भी उनको प्रभा-मण्डल (क्राउन ऑफ लाइट) से सुशोभित दिखाया जाता है जबकि अन्यान्य महात्मा लोगों को सन्यास करने के पश्चात् अथवा किसी विशेष कर्तव्य के पश्चात् ही प्रभा-मण्डल दिया जाता है। श्रीकृष्ण की किशोरावस्था को भी इसी कारण से माताएँ बहुत याद करती हैं और भगवान् से प्रार्थना करती हैं कि यदि बच्चा हो तो श्रीकृष्ण जैसा हो, क्योंकि वे बाल्यावस्था से ही पूज्य थे।

श्रीकृष्ण के 'मोर-मुकुट' से उनकी पवित्रता सिद्ध है

मोर-पंख पवित्रता का प्रतीक है। धर्म-ग्रंथों पर कई लोग जो चंवर घुमाते हैं वह चंवर मोर-पंखों के बने होते हैं। अपनी पुस्तकों में भी कई लोग मोर-पंख रखते हैं। इसका कारण यही है कि लोग मोर को पवित्र पक्षी मानते हैं। श्रीकृष्ण के मुकुट में मोर-पंख इसी रहस्य के प्रतीक हैं कि वह पूर्ण पवित्र थे।

इसके अतिरिक्त प्रभा-मण्डल भी निर्विकारिता का सूचक है। 'श्री' की उपाधि से भी सिद्ध होता है कि कृष्ण पूर्ण पवित्र थे। आज तो 'श्री' शब्द को रस्मी तौर पर 'मिस्टर' शब्द के स्थान पर प्रयोग कर दिया जाता है परन्तु वास्तव में 'श्री' शब्द केवल देवताओं



के नाम के आगे प्रयोग हो सकता है क्योंकि उनका जीवन पवित्र होता है। श्रीकृष्ण की 'वैकुण्ठनाथ' की उपाधि से सिद्ध है कि उनका जन्म पूर्ण पवित्र था। आप सोचिये कि जबकि श्रीकृष्ण की अनन्य भक्ति करने वाले नर-नारी भी काम-विकार को छोड़कर ब्रह्मचर्य व्रत धारण करते हैं तो स्वयं श्रीकृष्ण का जन्म इस विकार से कैसे हुआ होगा? मीरा का उदाहरण हमारे सामने है उसने श्रीकृष्ण की भक्ति के कारण अपने सारे जीवन में ब्रह्मचर्य का पालन किया और इसके लिए विष का प्याला भी पीना सहर्ष स्वीकार कर लिया। अतः जबकि श्रीकृष्ण की भक्ति के लिए,

उनका क्षणिक साक्षात्कार मात्र करने के लिए और उनसे कुछ मिनट रास रचाने के लिए भी काम-विकार का पूर्ण बहिष्कार ज़रूरी है तो आप सोचिये कि श्रीकृष्ण के माता-पिता, मित्र-सम्बन्धी इत्यादि काम-वासना वाले लोग कैसे हो सकते हैं? श्रीकृष्ण के साक्षात् स्वरूप को तो काम-वासना वाले लोग छू भी नहीं सकते, उन्हें निहार भी नहीं सकते। अतः सिद्ध है कि उनका जन्म और जीवन पूर्णतः पवित्र था। इस कारण यह वाक्य प्रचलित है कि 'जहाँ श्याम हैं, वहाँ काम नहीं और जहाँ काम है वहाँ श्याम नहीं।'

श्रीकृष्ण पर मिथ्या कलंक

श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण पूर्ण निर्विकारी व बिल्कुल ही पवित्र थे। इसलिए भक्त लोग उनके प्रत्येक अंग के नाम के पूर्व 'कमल' शब्द जोड़ते हैं; यथा-कमल नयन, कमल मुख, कमल हस्त इत्यादि। परन्तु दूसरी ओर आज लोग श्रीकृष्ण पर अनेक मिथ्या कलंक भी लगाते हैं। वे कहते हैं - श्रीकृष्ण की 108 पट-रानियाँ थीं, उनसे उनके हजारों बच्चे पैदा हुए, उन्होंने गोपियों के चोर चुराये, उन्होंने हिंसक युद्ध कराया, इत्यादि-इत्यादि। इस प्रकार वे काम, क्रोध, हिंसादि विकारों के दाग लगाते हैं। इससे बहुत अनर्थ हुआ है। आप ही सोचिये कि जबकि महात्मा लोग भी अहिंसा पालन करते हैं और ब्रह्मचर्य व्रत धारण करते हैं तो क्या महात्माओं के भी पूज्य देव-शारोमणि श्रीकृष्ण पूर्ण अहिंसक और अकामी न होंगे? द्वापर युग और कलियुग के लोगों के अपने जीवन में ही काम, क्रोध, हिंसा आदि ने पक्के डेरे डाल रखे हैं; इसलिए "जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि" की उक्ति के अनुसार वे विकारी लोग श्रीकृष्ण के उज्ज्वल चरित्र पर भी काले धब्बे लगाते हैं। इस बारे में हमें एक दृष्टान्त याद आता है - कहते हैं कि एक किसान ने अपनी

ज़मीन का लगान (कर, रेवेन्यु) राजा को नहीं दिया था। इस अपराध की सज़ा में राजा ने उसे शहर से निकल जाने की आज्ञा दी। वह किसान नगर छोड़कर जंगल में चला गया। वहाँ एक कुटिया के बाहर उसने एक सन्यासी को बैठे देखा। किसान ने सन्यासी से पूछा - "क्यों जी, आपने अपनी ज़मीन का लगान नहीं दिया था जिससे कि राजा ने आपको नगर से निकाल दिया?"

अब वास्तव में राजा ने सन्यासी को निकलने की आज्ञा तो नहीं दी थी परन्तु किसान को जैसा अनुभव था, उसने दूसरे के बारे में भी वैसा सोच लिया। ठीक इसी प्रकार, जिन लोगों को पूर्ण पवित्रता का अनुभव नहीं है, वे समझते हैं कि सभी विकारी हैं और सभी विकारी थे।

सोलह कला सम्पूर्ण श्रीकृष्ण

श्रीकृष्ण के लिए तो प्रसिद्ध है कि उन्होंने द्रोपदी के चोर बढ़ाये थे और लाज रखी थी और 'देवता' शब्द का तो प्रयोग ही उन्हीं के लिए है जिनकी दृष्टि, वृत्ति और कृति दिव्य हो। यदि किसी के कर्म मनुष्यों की तरह विकारी हैं तो वह 'पूज्य' अथवा 'देवता' किस अर्थ में कहा जा सकता है?

अतः निस्संदेह श्रीकृष्ण पूर्ण निर्विकारी थे। वे सोलह कला सम्पूर्ण थे। आज लोग कला का अर्थ नृत्य कला, संगीत कला इत्यादि मानते हैं और वे समझते हैं कि श्रीकृष्ण बाँसुरी बजाने में, रास रचाने में, युद्ध लड़ने में निपुण थे और इस प्रकार सोलह कला सम्पन्न थे। परन्तु वास्तव में कला का अर्थ दर्जा (डिग्री) है। चाँद अमावस्या के बाद से लेकर पूर्णमासी तक प्रतिदिन जितना बढ़ता है उसे कला कहते हैं। पूर्णमासी के दिन वह सोलह कला सम्पूर्ण प्रकाशमान होता है। इसी प्रकार श्रीकृष्ण को 'सोलह कला सम्पूर्ण' कहने का अर्थ यह है कि वह पूर्ण पवित्र थे, उनमें अपूर्णता न थी। यह महिमा किसी महात्मा, गुरु या व्यक्त देवता की नहीं है। अतः अन्दाज़ा लगाना चाहिये कि वह कितने उच्च थे; कितने महान् थे! जन्म-अष्टमी के दिन ऐसी दिव्य आत्मा का जन्मदिन मनाया जाता है। यह किसी साधारण आत्मा या सामान्य महात्मा का जन्म-दिन नहीं है। इसलिए इसे समझकर मनाना चाहिए।

श्रेष्ठ कर्म ही आधार, श्रेष्ठ जीवन का

ज्ञानसरोवर। कोई भी अपनी श्रेष्ठ करनी से ही प्रख्यात होता है। करनी को सुधारने की ज़रूरत है। करनी सुधरेगी राजयोग शिविर कार्यक्रमों की निदेशिका ने कहा कि एक शिक्षित नारी पूरे परिवार के विकास की धुरी है। नारी के संस्थापक तथा वैश्विक अध्यक्ष ने कहा कि मैं ब्रह्माकुमारीज़ का शुक्रगुज़ार हूँ कि आपने मुझे यहां अपना विचार रखने का अवसर



महिला सम्मेलन में सम्बोधित करते हुए डॉ. एन्थोनी राजू, ऑल इंडिया काउंसिल ऑफ ह्यूमन राइट्स के संस्थापक तथा वैश्विक अध्यक्ष। मंचासीन हैं ब.कु. डॉ. सविता, ब.कु. चक्रधारी, ब.कु. शीलू, डॉ. प्रमिला गुप्ता तथा ब.कु. मोहिनी।

राजयोग के अभ्यास से विकास से ही विश्व का भी परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से महिलाओं को ही नए विश्व का आधार बनाया। आज 80 वर्षों के बाद पारमात्मा का यह ज्ञान दुनिया भर में फैल चुका है। उक्त विचार ब्रह्माकुमारीज़ के महिला प्रभाग द्वारा आयोजित 'महिलाओं का सर्वांगीण विकास' विषयक अखिल भारतीय सम्मेलन में राजयोगिनी चक्रधारी दीदी, सम्मेलन की अध्यक्ष ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा की दादियों के रूप में आज वे बहनें माताएं विश्व स्तर पर आध्यात्मिक लीडर्स के रूप में सर्व के जीवन को पवित्र बना रही हैं। आज भी यह कार्य जारी है।

उन्होंने कहा की दादियों के रूप में आज वे बहनें माताएं विश्व स्तर पर आध्यात्मिक लीडर्स के रूप में सर्व के जीवन को पवित्र बना रही हैं। आज भी यह कार्य जारी है।

ब.कु. शीलू, ब्रह्माकुमारीज़ विकास से ही विश्व का भी विकास संभव है। उन्होंने कहा कि भौतिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास से ही किसी भी नारी का सर्वांगीण विकास माना जायेगा, अन्यथा विकास अधूरा है।

नेत्रहीनता निवारण राष्ट्रीय कार्यक्रम, भारत सरकार की उप महानिदेशिका डॉ. प्रमिला गुप्ता ने कहा कि इस सम्मेलन का विषय काफी समयानुकूल है। नारी का सर्वांगीण विकास एक बड़ी बात है। नारियों को आत्म विकास करना होगा। ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षाएं नारियों का सर्वांगीण विकास करेंगी, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

डॉ. एन्थोनी राजू, ऑल इंडिया काउंसिल ऑफ ह्यूमन राइट्स के

सद्भावना से सर्व समस्याओं का अंत

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'गांवों के सर्वांगीण विकास' विषय पर त्रिदिवसीय सम्मेलन

ज्ञानसरोवर। ब्रह्माकुमारीज़ के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा 'गांव के सर्वांगीण विकास का आधार-सद्भावना' विषय पर एक अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस सम्मेलन में बड़ी संख्या में प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा ब.कु. सरला दीदी ने कहा कि आध्यात्मिकता के सद्भावना बनी रहती है, वैसी ही हमारे किसान विपरीत परिस्थितियों को समझते हैं और उनसे बचना भी जानते हैं। अब सिर्फ सद्भावना अपने जीवन में अपनाकर दुनिया सुखमय बनाने में अपना योगदान देते रहें।

मध्य प्रदेश किसान कल्याण, कृषि मंत्री गौरीशंकर बिसेन ने कहा कि अध्यात्म से मूल्यों को निखार लिया जाए तो किसानों की आर्थिक उन्नति तीव्रगति से



सम्मेलन में सम्बोधित करते हुए म. प्र. किसान कल्याण कृषि मंत्री गौरीशंकर बिसेन। मंचासीन हैं ब.कु. किरण, राजयोगिनी ब.कु. सरला, राजयोगी ब.कु. राजू, ब.कु. राजेन्द्र तथा ब.कु. महेंद्र ठाकुर।

आधार पर ही हम मन में सर्व के लिए सद्भावना भर सकेंगे। पूरी दुनिया के लिए मन में सद्भावना रखने से धरती माता धन्य होगी और संसार को धन धान्य से परिपूर्ण कर देंगी। आत्मा के ज्ञान से सारे किसान जागृति को प्राप्त करेंगे।

डॉ. राम खर्चे, चेयरमैन, पूना कृषि संस्थान ने कहा कि जैसे अपने बच्चे के लिए प्राकृतिक रूप से प्रदान करके जन जन तक पहुँचाने की ज़रूरत पर बल दिया। उन्होंने कहा कि मैंने यहां से सीखा कि सन्तुष्टता कैसे जीवन में प्राप्त की जा सकती है।

डॉ. राम खर्चे, चेयरमैन, पूना कृषि संस्थान ने कहा कि जैसे अपने बच्चे के लिए प्राकृतिक रूप से प्रदान करके जन जन तक पहुँचाने की ज़रूरत पर बल दिया। उन्होंने कहा कि मैंने यहां से सीखा कि सन्तुष्टता कैसे जीवन में प्राप्त की जा सकती है।

डॉ. राम खर्चे, चेयरमैन, पूना कृषि संस्थान ने कहा कि जैसे अपने बच्चे के लिए प्राकृतिक रूप से प्रदान करके जन जन तक पहुँचाने की ज़रूरत पर बल दिया। उन्होंने कहा कि मैंने यहां से सीखा कि सन्तुष्टता कैसे जीवन में प्राप्त की जा सकती है।

डॉ. राम खर्चे, चेयरमैन, पूना कृषि संस्थान ने कहा कि जैसे अपने बच्चे के लिए प्राकृतिक रूप से प्रदान करके जन जन तक पहुँचाने की ज़रूरत पर बल दिया। उन्होंने कहा कि मैंने यहां से सीखा कि सन्तुष्टता कैसे जीवन में प्राप्त की जा सकती है।

समाज सेवा में निःस्वार्थ भाव को बनाए रखें

● मांगने की आदत छोड़ो, सिर्फ बाँटो, जीवन यही है हमारा

● विज्ञान बड़ा हो, महान हो, ये हमारे लिए बहुत ज़रूरी है

ज्ञानसरोवर। ब्रह्माकुमारीज़ के समाज सेवा प्रभाग द्वारा 'सदा सुखी एवं स्वस्थ समाज' विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय अखिल भारतीय सम्मेलन में समाज सेवा प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब.कु. संतोष दीदी ने सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए कहा कि सब सदा स्वस्थ रहें और सदा खुशी में नाचते रहें - सभी का यही लक्ष्य रहता है। बगैर प्रेम के जीवन बेकार है, औरों को खुशी प्रदान करने से ही खुशी प्राप्त होती है, लेकिन आज हर कोई लेना तो चाहता है मगर देना नहीं चाहता।

मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार के पी.एच.ई.डी. राज्य मंत्री सुशील कटारा ने कहा कि मैं हमेशा से ब्रह्माकुमारीज़



कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए राज्यमंत्री सुशील कटारा। मंचासीन हैं ब.कु. वंदना, ब.कु. प्रेम, ब.कु. अमीरचंद, ब.कु. संतोष दीदी तथा अन्य।

से सम्बद्ध होकर आनंदित होता रहा हूँ। हम सभी को मन लगाकर अपने दायित्व को ईमानदारी से निभाना चाहिए। उन्होंने कहा कि त्याग में ही हमारा भाग्य है। मांगने की आदत ना रहे। समाज की सेवा के लिए अपना सब कुछ कुर्बान

करें। सभी को खुशी प्रदान करें। समाज सेवा प्रभाग के उपाध्यक्ष राजयोगी ब.कु. अमीर चंद ने इस सम्मेलन का लक्ष्य बताया और कहा कि आप सभी समाजसेवी दुनिया की पीड़ा को महसूस करते हैं और उनकी मदद के लिए आगे

आते हैं। आप इसीलिए अन्य लोगों से खास हैं। समाजसेवी सानु भाई कार्की, नेपाल ने कहा कि समर्पित, उत्तरदायी, ऊर्जावान लोग ही समाज की सेवा कर सकते हैं। समाजसेवियों को अपने विज्ञान के

अनुरूप आगे बढ़ते रहना चाहिए। विज्ञान बड़ा हो, महान हो, ये ज़रूरी है। विकास खोलिया, उपाध्यक्ष, अनुसूचित जाति आयोग, राजस्थान ने कहा कि सभी चाहते हैं कि सभी स्वस्थ और सुखी रहें - समाज भी स्वस्थ और सुखी रहे। मगर यह अध्यात्म और राजयोग से ही संभव होगा।

समाज सेवा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक राजयोगी ब.कु. प्रेम ने आये हुए सभी मेहमानों का हार्दिक स्वागत किया। समाज सेवा प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब.कु. अवतार ने मेहमानों का आभार प्रकट किया और उनको धन्यवाद दिया। ब.कु. वंदना ने मंच संचालन किया।